Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

भिक्षु वाणी

निर्जरा

निरजरा ने निरजरा करणी,
ए दोनूंइ जीव नें आदरणी।।

आत्मशुद्धि और आत्मशुद्धि की प्रक्रियाये दोनों ही आदरणीय हैं।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 15 • 17 - 23 जनवरी, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 15-01-2022 • पेज : 12 • ₹ 10

तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम उत्तराधिकारी आचार्य श्री भारमलजी की निर्वाण द्विशताब्दी पर विशेष

"गुरु भिखू, रिख मिलिया भारी भारीमाल चेला हुआ सुखकारी। वीर गोतम ज्यूं जोड़ी बखाणी भारीमाल भजो भवियण प्राणी।।"

- आचार्य भारमलजी का जन्म विक्रम संवत 1804 में लोढ़ा गोत्र में हुआ। उनकी जन्मतिथि का कोई प्रमाण नहीं मिलता है।
- आचार्य भारमलजी की द्रव्य दीक्षा स्थानकवासी संप्रदाय में विक्रम संवत् 1813, बागोर में हुई।
- तेरापंथ धर्मसंघ की दीक्षा नामावली में आचार्य भारमलजी का नाम सातवें क्रम पर आता है।
- विक्रम संवत 1832 मिगसर बदी सप्तमी को स्वामीजी ने भारमलजी को युवाचार्य घोषित करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ के संविधान का प्रथम पृष्ठ लिखा।
- आचार्य भिक्षु के उत्तराधिकारी पत्र में उस समय के संघ में उपस्थित आठ संतो के हस्ताक्षर है। स्वामीजी पत्र निर्माता थे और भारमलजी के लिए पत्र लिखा गया था और मुनि टोकरजी को लिखना नहीं आता था तो केवल उन तीन को छोड़कर शेष सभी आठ संतो से हस्ताक्षरित पत्र है।
- आचार्य भारमलजी भाद्रव शुक्ला तेरस को सिरियारी में आचार्य पद पर आसीन हुए।
- आचार्य भारमलजी ने अपने साधु जीवन में आचार्य भिक्षु से केवल विक्रम संवत 1824 का चातुर्मास पृथक् किया। उस वर्ष स्वामीजी ने कंटालिया एवं भारमलजी ने बगड़ी में चातुर्मास किया।
- आचार्य भारमलजी गृहस्थ अवस्था में 10 वर्ष, द्रव्य दीक्षा में 4 वर्ष, साधारण साधु के रूप में 15 वर्ष, युवाचार्य के रूप में 28 वर्ष और आचार्य पद पर 18 वर्ष आसीन रहे। उनका कुल आयुष्य 75 वर्ष था। आचार्य भारमलजी माघ कृष्णा अष्टमी विक्रम संवत 1878 को देवलोक हुए।
- आचार्य भारमलजी के अंतिम संस्कार के लिए दो मंडियां एक राजनगर और एक सिरियारी से बनकर आई। अंतिम यात्रा में दोनों मंडियों का उपयोग करते हुए नीचे राजनगर और ऊपर सिरियारी की 41 खंडी मंडी में पार्थिव देह विराजित कर अंतिम यात्रा निकाली गई।
- अंतिम संस्कार में भारमलजी के ओढ़ी हुई चद्दर (पछेवड़ी) चिता के साथ नहीं जली यह एक आश्चर्य था, जिसका अवशेष आज भी लाडनूं की दीर्घा में सुरक्षित है।

- अंतिम यात्रा का विमान इतना बड़ा था कि बाजार का एक दरवाजा छोटा पड़ गया और विमान निकालने के लिए उसे तोड़ना पड़ा आज भी वह दरवाजा "फूटे दरवाजे" के नाम से भारमलजी की श्रद्धा में अव्यक्त उद्गार है।
- आचार्य भारमलजी के आचार्य पद पर आसीन होने के समय 21 साधु और 27 साध्वियां थी। उनके शासनकाल में 38 साधु और 44 साध्वियां दीक्षित हुई। 16 साधु और 26 साध्वियां देवलोक गमन तथा 8 साधु और तीन साध्वियां बहिर्गत हुई। दिवंगत होने के समय संघ में 35 साधु और 42 साध्वियां विद्यमान थी।
- आचार्य भिक्षु और भारमलजी को भगवान महावीर और गौतम की जोड़ी के नाम से भी जाना जाता है।
- कहा जाता है कि आचार्य भारमलजी का गांभीर्य और विश्वसनीयता इतनी प्रबल थी कि मूर्तिपूजक एवं स्थानकवासी संत गुप्त व्रत विधि प्रायश्चित करने उनके पास आते थे।
- कहा जाता है कि आचार्य भिक्षु पांचवे ब्रह्मदेव लोक में इन्द्र एवं आचार्य भारमल जी बारहवें देवलोक में उपेंद्र है।
- आचार्य भारमल जी को एक-भव-अवतारी और अच्युत कल्पवासी कहकर भी नमस्कार किया जाता है।

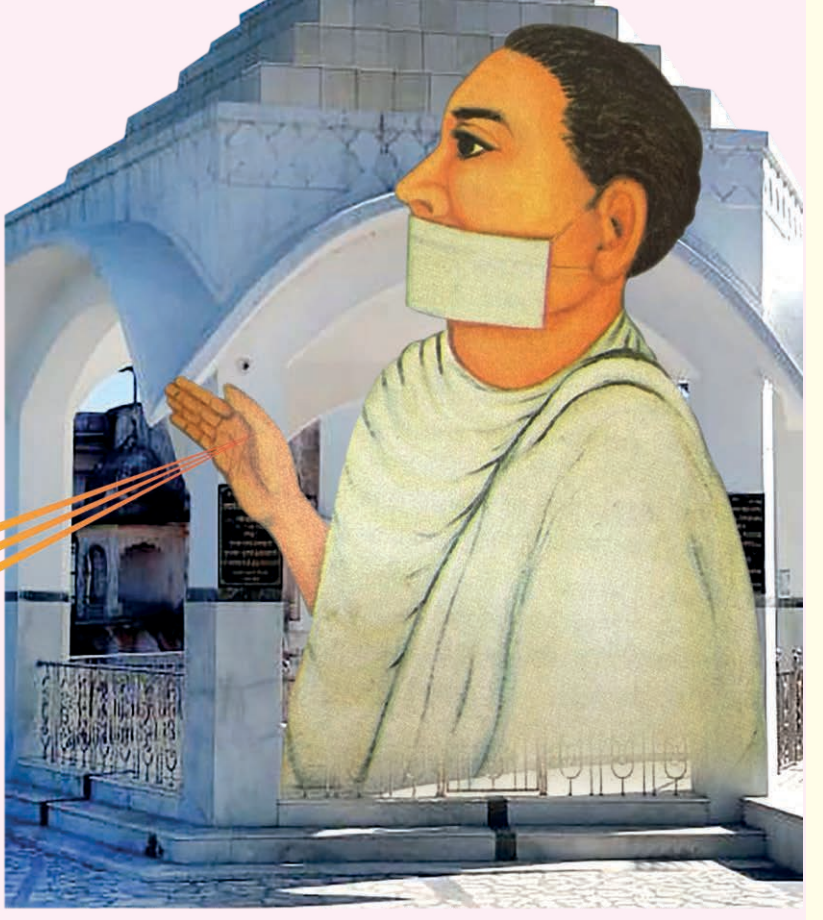

तेरापंथ के प्रथम युवाचार्य शासन के दूजे सरदार
गुरुभक्ति बेजोड़ तुम्हारी अलबेला निष्पृही अणगार
भिक्षु शासन में अब लग रहा महाश्रमण जी का दरबार
भारीमालजी पुनरपि आओ भरने शासन का भण्डार
द्विशताब्दी निर्वाण दिवस की करते वंदन बार हजार
हृदय देवते दिग्-दिगन्त में गूंजे तेरी जय जयकार

श्रद्धाप्रणत : अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
17 - 23 जनवरी, 2022

✦ *आदमी किसी भी देश, वेश व परिवेश में रहे, उसके मन में सच्चाई के प्रति सदैव सम्मान का भाव रहना चाहिए।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

मोह रूपी मूर्च्छा को तोड़ने के लिए अनित्यता का चिंतन कारगर होता है : आचार्यश्री महाश्रमण

कुचामन, ६ जनवरी, २०२२

परमार्थ के लिए पुरुषार्थ कर रहे महायायावर महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी १५ किलोमीटर का विहार कर कुचामण सिटी स्थित जवाहर नवोदय विद्यालय पधारे। विद्यालय भवन में शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हर प्राणी का जीवन अध्रुव है, शरीर अनित्य है। दो चीजें हैं—एक नित्यता। दूसरी अनित्यता। हमारी दुनिया में नित्यता है, तो अनित्यता भी है। हर पदार्थ नित्यानित्य होता है। एकांत नित्य और एकांत अनित्य की बात अमान्य है।

दीपक से लेकर आसमान तक सब पदार्थ समान हैं। जीव का शरीर अनित्य है, पर उसमें जो परमाणु हैं, वो तो नित्य ही हैं। परमाणु में पर्याय का बदलाव होता रहता है। शरीर एक पर्याय है और पर्याय अनित्य है। अनेकांत के दृष्टिकोण से हर बात सापेक्ष हो सकती है। ऋजुता, सरलता से बताया जाए तो अनेक दर्शनों की, धर्मों की बातें सही भी प्रतीत हो सकती हैं।

बारह भावना या सोलह अनुप्रेक्षाओं में पहली भावना अनित्य भावना होती है। मूर्च्छा-मोह को तोड़ने के लिए अनित्यता का चिंतन कारगर, सहयोगी हो सकता है।

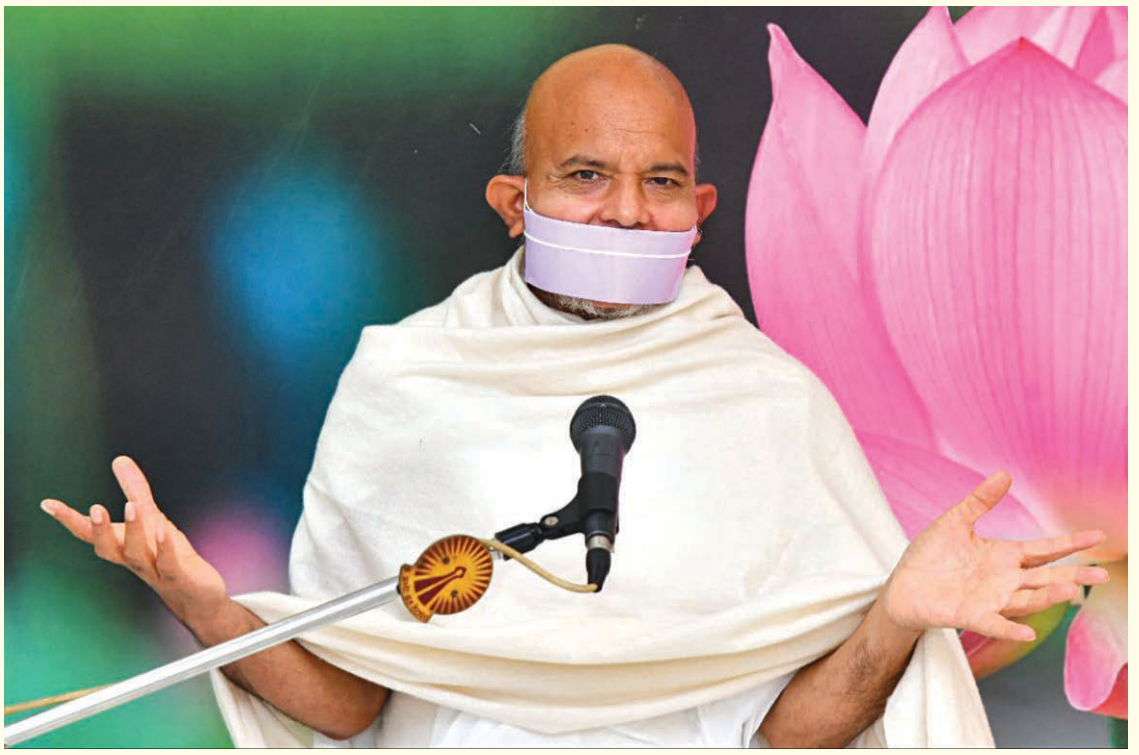

मेरे सहयोगी कोई स्थायी नहीं हैं, फिर मैं मोह क्यों करूँ? शांत सुधारस में उपाध्याय विनय विजय जी लिखते हैं कि बचपन में जिसके साथ खेले थे, उनमें से कई चले गए हैं। हमसे जो बड़े थे, जिनको हम प्रणाम करते थे, वे भी कई चले गए हैं। इतने लोग चले गए हैं। इतना देख लेने के बाद भी मैं तो निःशंक बैठा हूँ कि मुझे तो कभी जाना ही नहीं है। इस प्रमाद को धिक्कार है।

बहुत आसक्ति वाले लोग अमर की तरह आचरण करते हैं कि उनको आगे जाना ही नहीं है। तीर्थंकर भी पधार जाते हैं, निर्वाण हो जाता है। जीवन अनित्य है, यह एक प्रसंग से समझाया।

वर्तमान में हमारे धर्मसंघ में पूज्य कालूगणी के युग के एक भी साधु-साध्वी नहीं हैं। गुरुदेव तुलसी के युग के भी कितने साधु-साध्वियाँ चले गए हैं। जीवन अनित्य है, पर इस अनित्य जीवन में नित्य को यानी आत्मा को पाने का प्रयास करें। शरीरपिंड रूप अनित्य है। आत्मा के असंख्य पिंड नित्य है।

इस अनित्य शरीर से ऐसी साधना करें कि नित्य आत्मा का कल्याण हो सके, वो है अध्यात्म की साधना। अनित्य अनुप्रेक्षा-भावना साधना का एक प्रयोग है। एक चिंतन का कोण है। राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार। मरना सबको एक दिन अपनी-अपनी बार। मोह-मूर्च्छा को भंग करने के लिए, कमजोर करने के लिए अनित्यता का अनुचिंतन करना चाहिए। किसको कितना जीवन मिला है, उसका कोई पता नहीं है।

महावीर बनने के लिए महावीर का अनुकरण करो। आदमी को यथा औचित्य चलना चाहिए। अध्यात्म का आसेवन भी करना चाहिए। हम अनित्य अनुप्रेक्षा के द्वारा मूर्च्छा, मोह, ममता को तोड़ने का प्रयास करें, यह काम्य है। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

सोमवीर पुनिया ने पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अपनी भावना अभिव्यक्त की। प्रवचन के पश्चात राजस्थान सरकार के पूर्व मंत्री यूनुस खान ने पहुँचकर आचार्यप्रवर से आशीर्वाद लिया।

ज्ञान और क्रिया में पूरकता आए तो लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है : आचार्यश्री महाश्रमण

नावां-कासेड़ा, ८ जनवरी, २०२२

तेरापंथ धर्मसंघ की राजधानी लाडनूं की ओर गतिमान महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी १६ किलोमीटर विहार कर कांसेड़ा गाँव के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पधारे। मुख्य प्रवचन में अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्रकार ने एक श्लोक में मोक्ष मार्ग के चार अंगों की मानो संक्षिप्त व्याख्या कर दी है। मोक्ष के मार्ग में चार अवयव होते हैं। जैसे किसी गाड़ी में चार पहिए हैं, चारों पहिए ठीक होंगे तभी गाड़ी चल सकेगी वरना कठिनाई हो सकती है। वे हैं—ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप। ये चारों होंगे तो आत्मा मोक्ष को प्राप्त हो सकती है।

कोई सोचे चार में से एक ही स्वीकार करूँ तो समग्रता नहीं है। कई लोग सिद्धांत को, तत्त्व को जानते हैं, अहिंसा, संयम और तप को जानते हैं, पर उनका आचरण नहीं करते। कई आचरण करने में सक्षम हैं, किंतु उनके पास ज्ञान नहीं है। बिना ज्ञान के आचरण करें कैसे? दोनों अधूरे हैं, एक में कथा है, आचरण नहीं, एक में आचरण है, ज्ञान नहीं, यह अंधे-पंगु के दृष्टांत से समझाया कि हम एक-दूसरे के पूरक बनें। अकेले कुछ नहीं कर सकता है। पूरक बनने से कार्य सुसंपन्न हो सकता है।

ज्ञान और क्रिया में पूरकता आ जाए तो लक्ष्य प्राप्ति हो सकता है। चार अंगों की शास्त्रकार ने बात बताई है। ज्ञान के साथ श्रद्धा, निष्ठा, चारित्र और तप भी हो ये चारों मिलें तो मोक्ष मार्ग परिपूर्ण हो गया। खीर बनाने के लिए चावल, दूध, चीनी व मेवा चाहिए। एक पदार्थ कुछ नहीं कर सकता। चारों मिल गए तो खीर बढ़िया बन गई। इसी तरह चतुरंग मोक्ष मार्ग होता है। चारों का योग चाहिए।

आदमी ज्ञान से पदार्थों को जानता है, दर्शन से वो श्रद्धा करता है, चारित्र से निग्रह-संयम करता है, तपस्या से परिशुद्धि करता है। तपस्या के अनेक प्रकार हैं, उसका एक अंग शुभ योग है। तपस्या से कर्म को पतला करो, शरीर पतला करने से क्या हेतु है। साधु के बाह्य तप न हों पर आभ्यंतर तप तो कर सकता है। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी ने तपस्या तो नहीं की पर उन्होंने जो कार्य किए वो हर किसी के बस की बात नहीं है।

विवेक करो, अपना बल-श्रद्धा देखो, आरोग्य, क्षेत्र और काल को देखो। आचार्य भिक्षु सिर्फ तपस्या में ही लग जाते तो ये धर्मसंघ आगे कैसे बढ़ता। थिरपाल और फतेहचंद ने स्वामी जी से अच्छा सुझाव निवेदित किया था। विवेक देखकर तपस्या करें। हम ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप इस चतुष्टयी की आराधना करते हुए मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ें, बढ़ते रहें, जब तक मोक्ष न मिल जाए, यह काम्य है।

आज नावां गाँव के पास आए हैं, यह क्षेत्र जयाचार्य व माणकगणी से जुड़े हैं। कासेड़ा व नावां के लोगों में खूब धार्मिक भावना रहे। पूज्यप्रवर की अभिवंदना में स्कूल के प्रिंसिपल हीरालाल बरवड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

झूठ बोलकर जीतना हारने के समान होता है : आचार्यश्री महाश्रमण

गोविंदी, ७ जनवरी, २०२२

अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी सर्द और बर्फीले मौसम में ठंड की परवाह किए बिना १७ किलोमीटर का प्रलंब विहार कर नागौर जिले में गोविंदी ग्राम स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पधारे।

मुख्य प्रवचन में तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि एक है यथार्थवाद और दूसरा है—मृषावाद। दोनों मानो एक-दूसरे से विपरीत हैं। यथार्थवाद—यानी जैसा है, वही बतलाना। मृषावाद है—जैसी वस्तु स्थिति है, उससे भिन्न-गलत बता देना।

हमारा व्यवहार होता रहता है, साथ में भी रहते हैं। जहाँ अनेक हैं, वहाँ भाषा की अपेक्षा भी पड़ती है। लेन-देन का व्यवहार होता है। जहाँ व्यक्ति अकेला, अरण्यवासी है, वहाँ वह किससे कितना बोला। व्यवहार होता है, उसमें यथार्थवाद कितना है और मृषावाद कितना है, यह एक विचारार्थ बात बन सकती है। जब तक छद्मस्थता है, झूठ बोल सकता है। तात्त्विक बात है कि छठे गुणस्थान के बाद कोई झूठ नहीं बोल सकता।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

विशेष लेख

समर्पण के सुमेरु गुरु-भक्त का नाम है - आचार्य भारीमालजी

❐ साध्वी अणिमाश्री ❐

अपने जीवन के प्रत्येक व्यवहार से विनम्रता व समर्पण का पाठ पढ़ाने वाले कुशल अनुशास्ता का नाम है—आचार्य भारीमालजी। आगम-ज्ञान, न्याय-दृष्टि तथा तटस्थ वृत्ति की त्रिवेणी में अभिस्नात निर्मल चेतना का नाम है—आचार्य भारमालजी। श्रुतसागर में निरंतर अवगाहन कर मणि-मुक्ताओं को बटोरने वाले आगम-मनीषी का नाम है—आचार्य भारमलजी। गुरु की सीख को सर्वात्मना स्वीकार करने वाले समर्पण के सुमेरु गुरु-भक्त का नाम है—आचार्य भारमालजी। पाँच लाख पद्यों का लेखन कर संघ के भंडार को समृद्ध करने वाली विलक्षण प्रतिभा का नाम है—आचार्य भारमालजी। प्रणम्य है उनकी एकाग्रता, अनुमोदनीय है उनकी कर्मठता, अनुकरणीय है उनकी सहजता, सरलता व पापभीरुता।

समभाव के उत्तुंग शिखर पर आसीन आचार्य भारीमाल जी ने जीवन के हर उतार-चढ़ाव में जो संतुलन रखा, वह धर्मसंघ की अनमोल धरोहर है। उदयपुर के महाराणा द्वारा आचार्य भारीमालजी को उदयपुर से निष्कासन का आदेश प्राप्त हुआ। आचार्य भारीमालजी ने बिना किसी प्रतिक्रिया के सहज भाव से वहाँ से विहार कर दिया, समता भाव में प्रतिष्ठित रहे। पुनः वहाँ के महाराणा ने अपनी भूल का अहसास करते हुए उदयपुर पधारने का निवेदन करवाया, किंतु आचार्य भारीमलाजी ने तुरंत आने से इनकार कर दिया। हर परिस्थिति में उनका साम्ययोग अप्रकंप बना रहा।

आचार्य भिक्षु द्वारा निर्मित मर्यादा की प्रयोगशाला के स्वनामधन्य आचार्य भारीमालजी प्रथम पुरुष रहे हैं। आचार्य भारीमालजी अनुशासनप्रिय आचार्य थे। वे आचार्य भिक्षु के अनुशासन में निखरकर संघ के भव्य-भाल पर किरीट बन सुशोभित हुए।

समर्पण की आँच में तपकर कुंदन बनने वाले आचार्य भारीमालजी ने धर्मसंघ की आने वाली हजारों-हजार पीढ़ियों को विनय, समर्पण का जीवंत संदेश दिया है। वे घंटों-घंटों खड़े-खड़े, स्वाध्याय करते। उनकी एकाग्रता, स्थिरता, तल्लीनता आज भी धर्मसंघ के अणु-अणु में प्रबल प्रेरणा का संचार कर रही है। विनय, समर्पण की स्याही से लिखा हुआ उनकी जीवन-पोथी का हर पन्ना नगीने की तरह चमकता हुआ वर्तमान पीढ़ी को दिशा-बोध प्रदान कर रहा है। आचार्य भिक्षु के परम भक्त, परम विनीत और प्रमुख शिष्य आचार्य भारीमालजी प्रज्ञावान, श्रमशील होने के साथ-साथ गुरुआज्ञा पर प्राणों का अर्घ्य चढ़ाने वाले थे। गुरु-भक्ति का उत्कृष्ट रूप उस वक्त निखरकर सामने आया, जब उन्होंने अपने संसारपक्षीय पिता मुनि किशनोजी के असीम वात्सल्य को अमान्य कर दिया। अपने पिता मुनि किशनोजी से कहा—

बोलै भारीमाल अजी मोटा पुरुषा मनै समझावो।

छोड़ दियो संसार बाप-बेटै रो अबै किसो दावो।

थारै हाथ रो अन्नजल ल्यूं तो त्याग मनै मत समझावो,

सुणतां उठ्यो उबाल, भीम भूचाल—

भीखणजी थारै कांई लागै।।

वज्रसंकल्पी भारीमालजी ने मुनि किशनोजी द्वारा लाए गए आहार-पानी का भावज्जीवन के लिए प्रत्याख्यान कर दिया। अपने वज्रसंकल्प पर अडिग रहे। इस भीष्म-प्रतिज्ञा को स्वीकार करने में जरा भी हिचकिचाहट नहीं हुई। धन्य है ऐसी महान विभूति के अदम्य संकल्प को।

भगवान महावीर ने कहा है—'सोहीज्जुयभूयस्स' शुद्धि उसी की होती है, जो सरल है। आचार्य भारीमालजी के जीवन में भगवान महावीर की वाणी का स्पष्ट निदर्शन मिलता है। ऋजुता के रंग में रंगी उनकी संयम-निष्ठा धर्मसंघ में आज भी नया रंग बिखेर रही है। उनके जीवन में बालक जैसी सरलता थी। वो बिना किसी लाग-लपेट के अपनी जीवन-पोथी के हर पन्ने को सबके सामने सरलता से प्रकट कर देते थे। उनके जीवन का यह घटना-प्रसंग उनकी सरलता का स्वयंभू साक्षी है।

आचार्य बनने के बाद एक परंपरापोषी भाई ने आचार्य भारीमलजी से पूछा—खम्मा अन्नदाता! बचपन में आपके कान क्यों नहीं बींधे? आचार्य भारीमालजी ने सरलता के साथ उस भाई से कहा—श्रावकजी! हमारे उधर मेवाड़ में बच्चे की कान-बिंधाई पर पारिवारिक लोगों को भोज दिया जाता है। गीत गाने वाली महिलाओं को गुड़ बाँटा जाता है। मेरे संसारपक्षीय परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर थी। गुड़ बाँटने और सबको भोजन करा सके, उतने पैसे की व्यवस्था मेरे पिताजी के पास कहाँ थी, जो मेरी कान-बिंधाई की रस्म को पूरा कर सके। यह थी उनकी ऋजुता, सरलता, सहजता जो आज भी हमें सरल व सहज जीवन जीने की प्रेरणा दे रही है।

निर्भयता, निःसंगता, स्थितप्रज्ञता, स्थिरयोग समता, स्वाध्याय, रुचि इन जीवन-सूत्रों ने उनकी साधना को शुक्लता प्रदान की। इन्हीं विरल-गुणों के कारण आचार्य भारीमलजी की जीवन-चर्या, दिनचर्या, समयचर्या व ऋतुचर्या से अत्यंत प्रभावित संत मुनि हेमराजजी ने उन्हें एकाभवतारी कहकर नमन किया है। उनके निर्मल चारित्र का यज्ञ आज भी दिग-दिगंत में व्याप्त होकर अणु-अणु में प्राणवत्ता का संचार कर रहा है।

आचार्य भिक्षु की धरोहर संभालने वाले प्रथम व्यक्तित्व आचार्य भारीमलजी का जीवन-वृत्त पुरुषार्थ की स्याही से लिखा हुआ एक दुर्लभ ग्रंथ है। जिनके प्रत्येक पन्ने ही हर पंक्ति वर्तमान पीढ़ी का मार्गदर्शन कर रही है। अप्रमत्तता, नियमितता, निरंतरता के रस से धुली सरस जीवन-गाथा आज भी हम सबको सरसब्जता प्रदान कर रही है। परमपूज्य महातपस्वी आचार्य महाश्रमणजी के निर्देशन में धर्मसंघ आचार्य भारीमाल जी स्वामी के महाप्रयाण का द्विशताब्दी समारोह मना रहा है। मंगलमूर्ति आचार्य भारीमलजी को इस मंगल अवसर पर श्रद्धा का अर्घ्य समर्पित कर रहे हैं। आचार्य भारीमालजी का प्रत्येक गुण हमारे भीतर संक्रांत हो। इन्हीं मंगलभावों के साथ श्रद्धासिक्त अंतहीन प्रणाम! प्रणाम!! प्रणाम!!!

भिक्षु पट्टधर भारीमाल को पल-पल क्षण-क्षण ध्यायें

● मुनि कमल कुमार ●

सादर शीष नमायें।।
पिता-पुत्र ने भिक्षु गुरुकर, संयम सुरमणि पाया
अस्थिर बना पिता संयम का, लाभ उठा ना पाया
भागी भारमल्ल गुरुवर की, महिमा प्रतिपल गायें।।१।।

बचपन में ही भारीमाल की, दुक्कर हुई कसौटी
प्रण पर पक्के रहे तीन दिन तज दी पानी रोटी
संयम में स्थिर रहे निरंतर बलिहारी हम जायें।।२।।

किशनोजी ने सोचा यह तो है मेरु सा पक्का
नहीं मानता बात बाप की हार गया कर धक्का
सोचा इसको भिक्षु प्यारे उनको जा संभलायें।।३।।

बत्तीसे मिगसर बिद सातम, बने भिक्षु के पट्टधर
मनोनयन का दृश्य मनोहर खुशियाँ छाई घर-घर
भिक्षु गुरु की सूझ-बूझ को कैसे हम विसरायें।।४।।

सांसारिक नातें हैं झूठे आत्मस्थित बन जाओ
भारीमाल ज्यों स्थिर हो करके जीवन सफल बनाओ
'कमल' साधना पथ पर बढ़कर भवसागर तर जायें।।५।।

लय : संयममय जीवन हो।

वृहद् मंगलपाठ कार्यक्रम

गदग।

तेरापंथ भवन में डॉ० साध्वी गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में नव वर्ष का वृहद मंगल पाठ का कार्यक्रम आयोजित किया गया। डॉ० साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति सुखी रहना चाहता है। दुःख किसी को पसंद नहीं है। हर क्षण व्यक्ति सुख का अनुभव कर सके, इसलिए प्रतिदिन प्रत्येक जीव को शुभ मंगलभावना से अपने आपको भावित करना चाहिए।

साध्वी मेरुप्रभा जी ने गीतिका का संगान किया। साध्वी दक्षप्रभा जी ने भावपूर्ण कविता का पाठ किया। साध्वी मयंकप्रभा जी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए कहा कि हर वर्ष आता है और चला जाता है। वही वर्ष, वही महीना, वही सप्ताह, वार आदि होते हैं। एक सिर्फ कैलेंडर नया लगता है। हमें जीवन में नयापन लाना है। सभा के अध्यक्ष अमृताल कोठारी, तेयुप के अध्यक्ष दिनेश संकलेचा, महिला मंडल की अध्यक्षा प्रेमलता कोठारी, स्थानकवासी समाज के किशन बाघमार व इंदिरा बाघमार ने शुभकामना व्यक्त करते हुए अपनी भावना व्यक्त की।

बच्चों को सिखाया प्रेक्षाध्यान

चिखली (सोलापुर)।

जिला परिषद विद्यालय के प्रांगण में ५वीं से ८वीं कक्षा के करीब १२५ बच्चों को प्रेक्षाध्यान सिखाया गया। साध्वी निर्वाणश्री जी अपनी सहवर्ती साध्वियों के साथ चिखली (सोलापुर) पधारी। जि०प०प्रा०वि० चिखली के बालकों को संबोधित करते हुए साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि जीवन की स्वस्थता के लिए गरदन, मेरुदंड व घुटनों का स्वस्थ रहना जरूरी है। ध्यान करने से पूर्व गरदन व मेरुदंड का सीधा रहना बहुत जरूरी है।

प्रेक्षाध्यान का एक पूरा कार्यक्रम है, इसके द्वारा जीवन में वांछित परिवर्तन लाया जा सकता है। साध्वीश्री जी ने ॐ की ध्वनि, ज्ञानमुद्रा, आसन के प्रयोग, श्वासप्रेक्षा व संकल्पशक्ति के प्रयोग कराए।

उन्होंने आचार्यश्री महाश्रमण जी की अहिंसा यात्रा व साध्वी निर्वाणश्रीजी का परिचय करवाते हुए जैन मुनि की जीवनचर्या बताई। साध्वी निर्वाणश्री जी ने बच्चों को आशीर्वाद प्रदान किया। स्कूल के प्रधानाध्यापक माने सर ने कृतज्ञता ज्ञापित की। साथ में वीरेंद्र बैद, सुमन बोहरा आदि भी उपस्थित रहे।

झूठ बोलकर जीतना हारने के समान...

(पृष्ठ २ का शेष)

साधु के तो मृषावाद बोलने के तीन करण तीन योग से त्याग होता है, परंतु गलती भी हो सकती है। गृहस्थों के भी मजबूत संकल्प हों तो वह मृषावाद से बच सकता है। कठिनाई आ सकती है। ईमानदारी परेशान हो सकती है, परास्त नहीं हो सकती। परेशानियों को झेल सकें, कुछ कंटकाकीर्ण पथ पर चल सके, तो आगे तो फिर बहुत अच्छी मंजिल है। आदमी परेशानियों से परास्त हो, मृषावाद में जा सकता है। झूठा आरोप न लगाएँ।

न्यायालय न्याय का मंदिर होता है, वहाँ अयथार्थ को बैठने का स्थान भी न मिले। अपराध को राई से पहाड़ न बनाया जाए। लोकतंत्र का एक अंग है—न्यायपालिका। उसमें न्याय की आशा की जा सकती है। न्याय के आसन पर बैठने वाला व्यक्ति तो बड़ा आदमी होता है। न्याय देने में तेरा-मेरा न हो। वहाँ धर्म की बात हो। दुनिया में आज भी न्याय चलता है।

झूठ के आधार पर विजय प्राप्त करना गलत है। झूठ बोलकर जीतना भी हार है। न्यायालय में यथार्थवाद रखा जाए। गृहस्थों के जीवन में भी यथार्थता रहे। स्वयं स्वयं का मूल्यांकन करें। दुनिया में ईमानदारी का महत्त्व है। बेईमानी का कमाया पैसा पाप है। लड्डू भले छोटा हो, पर चौगुणी का मीठा हो। असली और नकली की पहचान हो। डफोलशंख केवल बोलता है, करता कुछ नहीं है। हम शंख बनें। हमें गलत बात नहीं करनी चाहिए। सत्य लोक में सारभूत है, उससे कल्याण हो सकता है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

✦ *सेवा और शुचिता–दोनों का योग बना रहे तो 'नैतिकता की सरिता : महक उठे मानवता' की बात साकार हो सकती है।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

सिलाई मशीन भेंट

चेन्नई।

अभातेमम के तत्त्वावधान में तेमम के द्वारा संचालित तुलसी सिलाई प्रशिक्षण केंद्र में एक ओवरलॉक सिलाई मशीन एवं दो कुर्सी प्रदान की गई। सिलाई मशीन के प्रायोजक उषा बोहरा एवं चेयर के प्रायोजक लता पारख रहे। इस प्रशिक्षण केंद्र में अनेक बहनें सिलाई का प्रशिक्षण प्राप्त कर अपना व्यक्तिगत रोजगार प्रारंभ करने के लिए तैयार हो रही हैं।

इस तुलसी सिलाई केंद्र में अभी तक ३० बहनों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया है। २० बहनें सर्टिफिकेट प्राप्त कर चुकी हैं। इसी केंद्र में रोजगार के क्षेत्र में बेकिंग क्लास चलाई जा रही है और अनेक बहनें इससे लाभान्वित हो रही हैं।

इस अवसर पर अध्यक्ष पुष्पा हिरण, मंत्री रीमा सिंघवी, कोषाध्यक्ष हेमलता नाहर, सहमंत्री कंचन भंडारी, कार्यसमिति सदस्य उषा धोका उपस्थित थे। संयोजिका निर्मला छल्लानी की देखरेख में तुलसी सिलाई केंद्र का सुचारु रूप से संचालन हो रहा है।

दादी-पोती सेमिनार का आयोजन

जसोल (बायतु)।

टीपीएफ के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक डॉ० मुनि रजनीश कुमार जी के सान्निध्य में, अभातेमम के निर्देशन व तेमम के तत्त्वावधान में बायतु कन्या मंडल द्वारा दादी-पोती सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का विषय था–दो पीढ़ियों का हो मिलन, संस्कारों का हो वपन। कार्यक्रम के मंगलाचरण में कन्या मंडल द्वारा गीतिका का संगान किया गया।

इस अवसर पर डॉ० मुनि रजनीश कुमार जी ने कहा कि वर्तमान संदर्भ में विचारों का आदान-प्रदान जीवन में बहुत जरूरी है, वर्तमान पीढ़ी बुजुर्गों की भावना का सम्मान करे, बुजुर्गों को भी वर्तमान पीढ़ी के प्रगतिशील विचारों के प्रति आशान्वित दष्टिकोण रखते हुए व्यवहार करना चाहिए।

इस अवसर पर मुनि ऋषि कुमार जी व मुनि रत्नेश कुमार जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। सेमिनार में ७ दादी-पोतियों की जोड़ी ने सुंदर प्रस्तुति दी। दादियों ने अपने जमाने की बातें बताईं, ताकि पोतियाँ निजी सार्वजनिक जीवन को तार्किक बना सुखी जीवन जी सकें।

इस अवसर पर कन्या मंडल प्रभारी कंचन आर० मालू ने दादी-पोती संबंधों पर वक्तव्य दिया। बाड़मेर से लीला देवी, तेरापंथ महिला मंडल मंत्री अनिता जैन, उपाध्यक्ष कविता भंसाली, मोहिनी देवी बालड़, शांति देवी, निर्मला गोलेच्छा, मोहिनी देवी मालू, पुष्पादेवी, केसरदेवी बालड़, वर्षिता बालड़, खुशी मालू, नेहा मालू, साक्षी छाजेड़, प्रज्ञा बालड़ सहित कन्या मंडल, महिला मंडल की गरिमामय उपस्थिति रही।

कार्यक्रम में आभार ज्ञापन कन्या मंडल संयोजिका कोमल भंसाली ने किया। कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल सह-संयोजिका तनु लोढ़ा ने किया।

रूपांतरण कार्यशाला

गदग।

कषाय विषय पर कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल, गदग द्वारा विजयराज जी के गोदाम में साध्वी गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी गवेषणाश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के साथ किया गया। महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण प्रेरणा गीत के द्वारा किया। तत्पश्चात महिला मंडल की अध्यक्षा प्रेमलता कोठारी ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि आज साल का आखिरी दिन है, चिंतन का दिन है कल नए साल के दिन कषाय का अल्पीकरण कर जीवन को सुखी बनाने का संकल्प करें।

डॉ० साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा कि क्रोध प्रीति नाश करता है। क्रोध में मानव दानव बन जाता है। जो आत्मा को नीच गति की ओर अग्रसर करता है। रूपांतरण कार्यशाला में परिवर्तन के टिप्स बताए गए।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि क्रोध शांति का नाशक और धर्म का क्षय करने वाला है। उपासिका सरस्वती कोठारी ने Root Causes of कषाय-क्रोध, मान, माया, लोभ के किन-किन लोगों ने भव बिगाड़े बताया। श्वेता बागमार ने साध्वीश्री जी का स्वागत करते हुए कहा कि मेरा अहोभाग्य है जो आज साध्वीश्री हमारे घर पधारे। आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष शोभा संकलेचा ने किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री विजेता भंसाली ने किया। कार्यक्रम में लगभग ४५ की संख्या में भाई-बहन उपस्थित रहे।

दादी-पोती सेमिनार का आयोजन

जोधपुर।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम, जोधपुर के तत्त्वावधान में तेरापंथ कन्या मंडल, जोधपुर द्वारा मुनि तत्त्वरुचि जी के सान्निध्य में 'दादी-पोती कार्यशाला' का आयोजन किया गया।

पाल रोड स्थित तेरापंथ भवन में आयोजित हुए इस कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा गीत के द्वारा मंगलाचरण किया। कन्या मंडल प्रभारी प्रियंका बैद ने स्वागत उद्बोधन दिया।

तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा सरिता कांकरिया की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में दादी व पोतियों द्वारा विशेष संवाद के माध्यम से वर्तमान में दोनों के बीच सामंजस्य और समन्वय के महत्त्व को सभी के समक्ष रखा।

इस अवसर पर कार्यक्रम विशिष्ट अतिथि तेमम मंत्री चंद्रा जीरावला ने बताया कि अभातेमम सभी शाखा परिषदों के माध्यम से पूरे भारत में इस कार्यशाला का आयोजन कर रही है, जो वर्तमान में अति आवश्यक है। सेमिनार में महिला मंडल व कन्या मंडल की सदस्याओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल संयोजिका पूर्ति मेहता ने किया।

रूपांतरण कार्यशाला

ईरोड।

अभातेमम द्वारा निर्देशित मुनि सुधाकर कुमार जी एवं मुनि नरेश कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित रूपांतरण कार्यशाला 'कषाय' विषय पर कार्यशाला का आयोजन तेमम द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ मंगलाचरण भारती डागा द्वारा हुआ। तत्पश्चात मुनि सुधाकर कुमार जी ने मधुर संगान के साथ कषायों पर प्रकाश डाला। कषाय आत्मा को मलिन बनाता है–क्रोध, मान, माया और लोभ ही कषाय का मूल कारण है। राग और द्वेष कर्म के बीज हैं। अतः मोह ही इन कर्मों को बनाता है। पारिवारिक जीवन–परिवार में जितने नकारात्मक विचार होंगे कषाय बढ़ेगा और जितने सकारात्मक विचार होंगे कषाय की उत्पत्ति कम होगी। अंत में मंत्री पिंकी वेदमूथा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यशाला में बहनों की उपस्थिति अच्छी रही।

सामायिक गोष्ठी का आयोजन

हैदराबाद।

तेमम के तत्त्वावधन में सुंदरी जोन की बहनों द्वारा हैदराबाद तेरापंथ भवन में सामायिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम गोष्ठी का आरंभ नमस्कार महामंत्र द्वारा किया गया। गोष्ठी का विषय रखा गया–'तत्त्वज्ञान क्यों आवश्यक'। सभी बहनों द्वारा इस विषय पर रोचक प्रस्तुति दी गई।

जीव-अजीव पुस्तक का प्रथम पाठ, गति चार का पाठन प्रेम सुराणा ने किया। विस्तार पूर्वक जानकारी हर्षलता दुधोड़िया ने दी। उन्होंने अनेक उदाहरणों द्वारा बहनों को गति के बारे में समझाया।

महिला मंडल अध्यक्ष अनिता गीड़िया ने बहनों को प्रतिमाह नारीलोक में आ रही ज्ञान चेतना प्रश्नोत्तरी और प्रति माह पहले, तीसरे बुधवार को आने वाली प्रतियोगिता के बारे में बताया।

Wisdom Wednesday भी करने की प्रेरणा दी। प्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के अमृत सिंचन पर प्रतिदिन ५१ संकल्प सभी सामायिक जोन की बहनों द्वारा जागरूकता से किए जा रहे हैं, की भी जानकारी दी गई।

नमिता सिंघी, अंजु गोलछा, सुमन दुगड़, मंजु लुणावत, ऋतु दुगड़, शांता बैद, रूबी दुगड़, हर्षलता दुधोड़िया, कुसुम दुधोड़िया, कविता बांठिया, प्रेम सुराणा, रेखा गोलछा, विनीता बोथरा आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही।

स्नेहम प्रोजेक्ट का आयोजन

राजलदेसर।

अभातेमम के निर्देशानुसार स्नेहम प्रोजेक्ट के अंतर्गत तेमम द्वारा राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय नं० ३ में पढ़ने वाले २२६ विद्यार्थियों को शिक्षण सामग्री सहित अन्य सामग्री–कॉपी, पेन, पेंसिल, रबड़, कटर, जुराब, बिस्किट, टॉफी आदि वितरित किए गए।

कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल द्वारा सामुहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। तत्पश्चात मंडल अध्यक्षा प्रेम देवी विनायकिया ने बच्चों को नमस्कार महामंत्र का सामुहिक संगान कराया। महिला मंडल मंत्री सविता बच्छावत ने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। विद्यालय के प्रधानाचार्य जगदीश प्रजापत ने महिला मंडल द्वारा किए गए पुनीत कार्य की सराहना की एवं विद्यालय परिवार के बच्चों को दिए गए सहयोग के प्रति धन्यवाद एवं आभार ज्ञापित किया तथा आभार-पत्र भेंट किया।

कार्यक्रम में महिला मंडल की उपाध्यक्ष राजू देवी बोथरा, कोषाध्यक्ष कुसुम देवी छलानी, प्रचार मंत्री बेवी बाई चोपड़ा, सरिता बैद, तेरापंथ सभा के कोषाध्यक्ष बिमल सिंह छलानी की गरिमामय उपस्थिति रही। बच्चों के चेहरे की खुशी देखकर सभी उपस्थित लोग भाव-विभोर हो उठे।

अंत्याक्षरी एवं प्रश्न-उत्तर कार्यक्रम

लिलुआ।

साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में भजनों की अंत्याक्षरी एवं प्रश्न-उत्तर का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित श्रावक समाज ने भरपूर आनंद लिया तथा अनेकों जिज्ञासाओं का अर्थ बहुत ही सरल भाषा में साध्वीश्री जी ने समझाया।

कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु अच्छी संख्या में श्रावक समाज की उपस्थिति रही। तेयुप, लिलुआ द्वारा सभी का आभार प्रकट किया गया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री अशोक श्रेयांस बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	11,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000

हमारा परस्पर विनय समर्पण भाव सबके लिए प्रेरणा है

बैंगलोर।

जैन स्थानक चामराजपेट में विराजित शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के दर्शनार्थ पधारी साध्वी सिद्धांतश्री जी एवं साध्वी दर्शितप्रभा जी साध्वियों के परस्पर विनयपूर्वक वंदना व्यवहार के साथ मिलन को देख सभी भाई-बहन रोमांचित थे। तेरापंथ धर्मसंघ का यह एक प्रेरक दृश्य है कि चातुर्मास समाप्ति के बाद साधु-साध्वियाँ दीक्षा ज्येष्ठ चारित्रात्माओं से मिलते हैं तथा संवत्सरी संबंधी खमतखामणा करते हैं। शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी, साध्वी उदितप्रभा जी, साध्वी निर्भयप्रभा जी एवं साध्वी चेलनाश्री जी ने सुमधुर स्वर लहरी में दोनों साध्वियों का स्वागत किया तथा सुख-पृच्छा के साथ प्रसन्नता व्यक्त की।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि साध्वी लावण्यश्री जी की गुणवत्ता है कि उन्होंने स्वयं के स्वास्थ्य की अनुकूलता न होते हुए भी दो साध्वियों को हमारे से मिलने भेजा। यह हमारी पावन परंपरा है। हमारे विनय, समर्पण तथा सौहार्द भाव को देखकर श्रावक समाज भी प्रेरणा लेते हैं।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में साधु-साध्वियों के चातुर्मास महानगरों के उपनगरों में कभी-कभी एक साथ होते हैं। मगर विनय व्यवहार साध्वियों की निजी संपत्ति होती है। उससे ही परस्पर वात्सल्य व सौहार्द संघीय चेतना को प्रवर्द्धमान करते हैं। साध्वी सिद्धांतश्री जी ने एवं साध्वी दर्शितप्रभा जी ने गीत का संगान किया। साध्वी सिद्धांतश्री जी ने कहा कि बहुत दिनों के बाद आपके दर्शनों की भावना फलीभूत हुई। आपके जीवन से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

साध्वी लावण्यश्री जी ने हमें आपके पास भेजा, ऐसा मौका बार-बार मिलता रहे। ज्ञानशाला प्रशिक्षिका बबीता चोपड़ा, पद्मा चोपड़ा, बबीता धारीवाल एवं गांधीनगर सभा के कोषाध्यक्ष बाबूलाल बाफना, जितेंद्र घोषल, केवल चंद रूपचंद देसरला, मनोज आदि उपस्थित थे।

स्वागत समारोह : सफल हो जीवन के हर पल

तिरुपुर।

तेरापंथ भवन में आयोजित स्वागत समारोह में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं, जिन्हें वीतराग भगवान महावीर का शासन मिला। भैक्षव शासन में साधना करने का अवसर प्राप्त हो रहा है। वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमण जी का शक्तिसंपन्न नेतृत्व मिल रहा है, जहाँ हम अपनी श्रद्धाभावना और सम्यक्त्व को पुष्ट कर रहे हैं। समर्थ गुरु की अनुशासना में हम सभी सफलता प्राप्त करते रहें। सफलता का प्रथम सूत्र है—आत्मविश्वास। आत्मविश्वासी व्यक्ति अपने संजोए स्वप्न पूर्ण कर सकता है। उन्होंने कहा कि तिरुपुर श्रावक समाज सौभागी है जहाँ गुरु चरण टिके, वर्धमान महोत्सव हुआ। इसी प्रकार सभी की श्रद्धा बढ़ती रहे, गुरु निष्ठा बढ़ती रहे।

साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी सिद्धयशा जी, साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी, साध्वी डॉ० चैतन्यप्रभा जी एवं साध्वी डॉ० शौर्यप्रभा जी ने मैसूर से तिरुपुर की यात्रा के अनुभवों से भावित गीत प्रस्तुत किया।

महिला मंडल अध्यक्ष सीमा श्यामसुखा ने साध्वीवृंद का स्वागत किया। शांतिलाल झाबक ने भावपूर्ण काव्य धारा से स्वागत किया। महिला मंडल ने स्वागत गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संयोजन संजू दुगड़ ने किया।

जीवन की सकल संपदा है संस्कार

उमरगाँव, महाराष्ट्र।

शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी ने हैदराबाद से मुंबई की ओर पदयात्रा करते हुए उमरगाँव में प्रवास किया। बहुजन हितार्थ ट्रस्ट पुणे द्वारा संचालित बहुजन हितार्थ विद्यार्थी वसतिगृह उमरगाँव में अनाथालय के बच्चों को संबोधित करते हुए साध्वीश्री जी ने कहा कि विद्यार्थी जीवन में विनय का भाव होना चाहिए। जीवन में क्रोध, आलस्य, प्रमाद, व्यसन, जुआ, चोरी आदि से बचना चाहिए। अच्छा विद्यार्थी बनने के लिए संकल्प, कार्यबल हमारा मजबूत होना चाहिए।

इस कार्यक्रम में अनाथालय के ५० बच्चे उपस्थित थे। प्राध्यापक प्रज्ञजीत, आर्यघोष, शंकयदीप, चित्रकला भोसले ने साध्वीश्री जी के प्रति आभार ज्ञापित किया। साध्वी मार्दवयशा जी ने बच्चों को नमस्कार महामंत्र और महाप्राण ध्वनि आदि यौगिक मुद्राएँ सिखाई। लगभग १० बच्चों ने व्यसनमुक्त बनने का संकल्प किया। हैदराबाद के उम्मेद घीया और बलबीर इस अवसर पर उपस्थित थे।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

लेब शुभारंभ

कृष्णानगर, दिल्ली।

विकास मंच व बीजेएस संगठन के संयुक्त तत्त्वावधान में लेब का शुभारंभ उपासक व संस्कारक विमल गुनेचा, राज्यप्रभारी व संस्कारक प्रकाश सुराणा, संस्कारक हेमराज राखेचा ने पूरी विधि-विधान से संपादित करवाया।

इस अवसर पर मुख्य ट्रस्टी धर्मचंद सेठिया, ट्रस्ट सचिव सुशील सुखानी, विकास मंच के अध्यक्ष ओमप्रकाश सुराणा, बीजेएस संगठन के अध्यक्ष प्रदीप संचेती, बीजेएस संगठन चिकित्सा प्रभारी अविनाश, तेमम, गांधीनगर संयोजिका सीमा चोपड़ा के साथ विभिन्न सभा-संस्थाओं की उपस्थिति रही।

विकास मंच की तरफ से ओमप्रकाश सुराणा ने संस्कारकों एवं पधारे हुए सभी पदाधिकारियों का आभार ज्ञापन किया।

नामकरण संस्कार

पूर्वांचल-कोलकाता।

रितेश सिंघी व पायल सिंघी के आँगन में पुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि द्वारा अभातेयुप संस्कारक सुरेंद्र सेठिया द्वारा संपादित करवाया। पूर्वांचल सभा के अध्यक्ष संजय सिंघी, प्रताप चंद सिंघी, गुलाबचंद सिंघी आदि परिवार उपस्थित थे।

जैन संस्कार विधि के संयोजक सिद्धार्थ भंसाली ने परिषद की ओर से शुभकामनाएँ प्रेषित कर मंगलभावना यंत्र प्रदान किया। साथ ही सिंघी परिवार का आभार व्यक्त किया।

पाणिग्रहण संस्कार

पूर्वांचल-कोलकाता।

चुरू निवासी, पूर्वांचल-कोलकाता प्रवासी जुगराज कोठारी के सुपुत्र हर्ष कोठारी का शुभ पाणिग्रहण संस्कार सुकमा (छत्तीसगढ़) निवासी स्वर्गीय शुभाकर दास की सुपुत्री अर्पणा महिमा दास के संग जैन संस्कार विधि से अभातेयुप संस्कारक सुरेंद्र सेठिया व सह-संस्कारक विजय कुमार बरमेचा द्वारा संपन्न करवाया गया।

जुगराज कोठारी एवं सुनीता दास ने परिषद व संस्कारकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में उपस्थित तेयुप पूर्वांचल के संस्थापक अध्यक्ष एवं जैन संस्कार विधि के संयोजक रतनलाल श्यामसुखा ने शुभकामनाएँ एवं बधाई प्रेषित की।

नूतन गृह प्रवेश

सूरत।

सूरत प्रवासी कमोल निवासी चांदमल परमार के सुपुत्र नरेश परमार के नूतन गृह प्रवेश कमोल (राजस्थान) में जैन संस्कार विधि से सूरत से संस्कारक कांतिभाई मेहता एवं मीठालाल भोगर ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से सानंद संपन्न करवाया। सभी ने संस्कारकों की प्रेरणा से अपने सामर्थ्य अनुसार त्याग-प्रत्याख्यान किए।

चांदमल परमार ने दोनों संस्कारकों का व सभी आगंतुकों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत द्वारा प्रेषित मंगलभावना यंत्र सूरत के संस्कारकों द्वारा भेंट किया गया।

शुभारंभ संस्कार

वानाग्राम, चेन्नई।

वानाग्राम, चेन्नई स्थित धरमचंद रणजीत कुमार लुंकड़ पूर्वाध्यक्ष तेरापंथ सभा और केवलचंद रोहित मांडोत के जॉइंट वेंचर महावीर सिरेमिक वर्ल्ड कजारिया प्राइम प्लस—तमिलनाडु के एकमात्र शोरूम में नवीन ४ ब्लॉक का शुभारंभ संस्कार जैन संस्कार विधि द्वारा संपादित हुआ।

नमस्कार महामंत्र के सामुहिक स्मरण एवं मंगलभावना पत्रक की स्थापना के साथ अभातेयुप ह्री संस्कारक स्वरूपचंद दांती एवं अभातेयुप धी संस्कारक मांगीलाल पितलिया ने संपूर्ण मंत्रोच्चार के साथ शुभारंभ संस्कार विधि संपादित करवाई। जैन संस्कार विधि की जानकारी देते हुए अभातेयुप उपाध्यक्ष रमेश डागा ने बधाई संप्रेषित की। तेयुप सहमंत्री संदीप मूथा ने आभार व्यक्त किया।

नामकरण संस्कार

साउथ हावड़ा।

मोमासर निवासी, साउथ हावड़ा प्रवासी पारस मल-सुनीता पटावरी के सुपौत्र व मुदित-ऋचा पटावरी के पुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष एवं अभातेयुप संस्कारक पवन कुमार बैंगाणी ने संपूर्ण विध एवं मंत्रोच्चार द्वारा संपादित करवाया।

अध्यक्ष बीरेंद्र बोहरा, संयोजक सुनीता नाहटा, हितेंद्र बैद, सह-संयोजक अजित दुगड़ ने अपनी आध्यात्मिक मंगलकामनाएँ प्रेषित की। कार्यक्रम का संचालन सुनील नाहटा, हितेंद्र बैद, अजित दुगड़ ने किया।

नूतन गृह प्रवेश

उधना।

दिनेश चिपड़ के यहाँ नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा किया गया। तेयुप की ओर से ललित चंडालिया ने गृह प्रवेश के उपलक्ष्य पर परिवार को शुभकामनाएँ दी एवं अनिल सिंघवी ने जैन संस्कार विधि के बारे में बताया। संस्कारक की टीम से संजय बोथरा ने परिवार के प्रति साधुवाद प्रेषित किया।

परिवार की ओर से दीपक चिपड़ ने पधारे हुए सभी संस्कारकों का एवं परिवारजनों का आभार ज्ञापन किया।

✦ *आदमी ही एक ऐसा प्राणी है, जो साधना के द्वारा सीधा मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

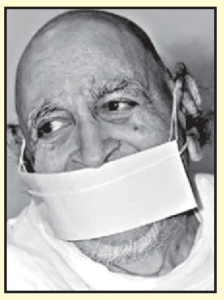

❑ आचार्य तुलसी ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

स्वभाव-परिवर्तन की प्रक्रिया : शरीर-प्रेक्षा

स्थूल साधना योग से, होता सूक्ष्म-प्रवेश।
प्रेक्षा सतत शरीर की, मिटे सभी संक्लेश।।
बाहर भीतर एकरस रहता है जो धीर।
उसे नहीं लगता कभी, ठंडा गरम समीर।।
बाह्यरमण से ही मनुज, बनता जो निष्णात।
तो आलोड़न के बिना, मिल जाता दधिजात।।

प्रश्न : ध्यान के प्रथम चरण में श्वास-प्रेक्षा का प्रयोग बहुत सरल और लाभदायक है। ध्यान के क्षेत्र में जिनका दीर्घकालिक अभ्यास नहीं है, उन साधकों को भी श्वास-प्रेक्षा करने में विशेष कठिनाई का अनुभव नहीं होता। उससे आगे की भूमिका में आलंबन क्या हो सकता है?

उत्तर : हमारे सामने दो प्रकार के जगत हैं—स्थूल-जगत और सूक्ष्म-जगत। अधिकांश व्यक्ति अपने जीवन का अधिक समय स्थूल-जगत में बिताते हैं। सूक्ष्म-जगत में प्रवेश करने का अवसर ही नहीं मिलता, यदि मिलता भी है तो बहुत कम। ध्यान एक प्रक्रिया है, स्थूल से सूक्ष्म प्रवेश की। स्थूल का अभ्यास करते-करते वहाँ एकाग्रता बढ़ती है और उस एकाग्रता से सूक्ष्म के द्वार का उद्घाटन होता है। शरीर-प्रेक्षा इसका एक उदाहरण है। दीर्घ-श्वास-प्रेक्षा के बाद शरीर प्रेक्षा का अभ्यास इस दृष्टि से बहुत उपयोगी है।

शरीर-प्रेक्षा अर्थात् शरीर को देखना, बाहर से भीतर तक शरीर का दर्शन करना। जब हम शरीर को देखना शुरू करते हैं, तो पहले स्थूल बातें पकड़ में आती हैं। जैसे-जैसे शरीर-प्रेक्षा का अभ्यास बढ़ता है, सूक्ष्म बातें भी पकड़ में आने लगती हैं। हमारे शरीर में प्रकंपन होते हैं, प्राण-विद्युत होती है, जिसके द्वारा सारी प्रवृत्तियाँ संचालित होती हैं, ग्रंथि-संस्थान होता है, वे अपना काम करते हैं। ज्ञानतंतु और कर्मतंतु भी अपना काम करते हैं। शरीरगत सब धातुओं की क्रियाएँ चलती रहती हैं। इन सारी घटनाओं को शरीर-प्रेक्षा के माध्यम से जाना जा सकता है। अभ्यास की परिपक्वता में अपने प्रभा-मंडल को भी देखा जा सकता है। शरीर की सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम गतिविधियों से भी परिचित हुआ जा सकता है। यह शरीर-दर्शन का रास्ता स्थूल से सूक्ष्म तक पहुँचने का रास्ता है।

प्रश्न : शरीर-प्रेक्षा करने से शरीर के भीतरी रहस्यों का अवबोध होता है, शरीर की सारी गतिविधियाँ ज्ञात हो जाती हैं और अपने प्रभा-मंडल को भी जाना जा सकता है। इस संदर्भ में प्रश्न यह है कि इन सबको जानकर क्या करना है? जो लोग इन्हें जानते हैं, वे भी जीते हैं और जो नहीं जानते हैं, वे भी जीते हैं। प्रसिद्ध दार्शनिक रसेल जब किसी पंडित से बात करते तो उन्हें ऐसी प्रतीति होती कि संसार में सुखी होना असंभव है। किंतु जब वे अपने बाग के माली, भोले-भाले थामस से बात करते तो उनकी धारणा बदल जाती। क्या इससे यह प्रमाणित नहीं होता है कि ज्ञान का विकास अशांति का कारण है?

उत्तर : ज्ञान अशांति का कारण है, यह बात तर्कसंगत नहीं है। अधूरा ज्ञान अथवा अयथार्थ ज्ञान अशांति का कारण बन सकता है। पर इनमें दोष ज्ञान का नहीं, उसके अधूरेपन या असम्यक रूप का है। नीति का कथन—

ज्ञानं मददर्पहरं माद्यति यस्तेन तस्य को वैद्यः।
अगदो यस्य विषायति तस्य चिकित्सा कथं क्रियते।।

ज्ञान मदजनित दर्प को समाप्त करने वाला है। यदि कोई ज्ञानी बनकर भी उन्मादी बन जाता है तो उसका चिकित्सक कौन हो सकता है? जिसके लिए औषधि भी जहर का काम करे, उसकी चिकित्सा कैसे की जा सकती है?

मेरे अभिमत से शरीर-तंत्र की जानकारी से जागरूकता बढ़ती है। जानकारी और जागरूकता के समुचित योग से आदतों को बदला जा सकता है। हमारे मस्तिष्क में एक तत्त्व है—स्मृति-रसायन। डॉक्टरों ने उसको पकड़ा। एक व्यक्ति के स्मृति-रसायन को निकाल वे दूसरे के इंजेक्शन लगाने में सफल हो गए। इसका प्रयोग एक चूहे पर किया गया। उसे कई दिनों तक ऐसा प्रशिक्षण दिया गया, जो उसे अंधेरे से प्रकाश में ले जाता था। प्रशिक्षण के बाद वह चूहा अनायास ही अंधेरे को छोड़ प्रकाश में चला जाता। उसे चूहे के 'स्मृति-रसायन' को निकालकर दूसरे चूहे को उसका इंजेक्शन लगाया गया। वह चूहा भी पहले चूहे की भाँति अंधेरे में नहीं रहा। चूहों पर किया गया यह प्रयोग मनुष्य पर भी किया जा सकता है, पर इसका ज्ञान न हो तो प्रयोग कैसे हो?

मनुष्य के मस्तिष्क में जो विचार-तरंगें, भाव-तरंगें हैं, उनमें क्रोध और अभिमान की तरंगें भी हैं। उनको वहाँ से हटाकर अच्छे भाव संप्रेषित करने के लिए तरंगों का, प्रकंपनों का बोध आवश्यक है। यंत्रों के द्वारा यह बोध करने में कठिनाई हो सकती है, पर ध्याता के लिए कोई कठिनाई नहीं होती। ध्यान के अभ्यास से वह जान लेता है कि किस केंद्र पर ध्यान करने से क्रोध मिटता है। किस केंद्र पर ध्यान करने से अहं समाप्त होता है। और कौन-सा केंद्र उलझनें समाप्त करने वाला है। शरीर-प्रेक्षा आदत-परिवर्तन की प्रक्रिया है, जीवन परिवर्तन का विज्ञान है और संक्लेश मिटाने का मार्ग है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

(५०)

पौरुष का कर थाम प्रगति के शिखरों पर तुम चढ़ते।
क्षितिज खोल गण में अभिनव इतिहास नया तुम गढ़ते।।

योगी बनकर कभी देव! तुम मार्मिक सत्य सिखाते
कभी दार्शनिक बन दर्शन के तथ्यों को सुलझाते
कभी तुम्हारे गीतों में कविहृदय झाँकता कोमल
किसी समय श्रद्धेय रूप में देते सबको संबल
पुण्यपुंज के साये में रहने वाले हैं विस्मित
कैसे अपने भक्तों के अंतर्मन को तुम पढ़ते।।

बालक-सा मृदुहास तुम्हारे इन अधरों पर रहता
उज्ज्वल आभामंडल से नित सुख का निर्झर बहता
अनाचार को देख तुम्हारा हृदय रहा अकुलाता
सदा सत्य के अन्वेषण में लगे रहे युगत्राता
भूत अनागत वर्तमान का रेखाचित्र बनाया
हर स्थिति में विकास के पथ पर आगे ही तुम बढ़ते।।

(५१)

सिरजकर तुमको हुई उजली स्वयं जो
उस निशा का बन गया इतिहास है।
यह उजालों से भरा दामन तुम्हारा
तिमिर-तट पर ज्योति का आवास है।।

ग्रंथि नूतन आज तुमने फिर लगाई
इस सुकोमल जिंदगी की डोर में
स्वर अहिंसा को सचेतन दे रहे तुम
मुक्त हिंसा के भयानक दौर में
तृप्ति की भटकन नहीं मंजिल तुम्हारी
प्यास में ही जब तुम्हें विश्वास है।।

शांति का संदेश देते बन फरिश्ते
मनुज हर युग में पुजारी शांति का
रच रहा रंगोलियाँ सूनी धरा पर
सुन सुखद आह्वान अभिनव क्रांति का
गीत बन जाए जगत की पीर सारी
एक ही स्वप्निल सभी की आश है।।

कर रहे हैं अर्चना उजले दिवस की
नखत तारे चाँद सूरज ये सभी
दे रही दस्तक सफलता द्वार पर खुद
मनुज क्या सुर भी प्रणत देखो कभी
नई संस्कृति का सृजन होगा तुम्हीं से
सदी अगली को हुआ अहसास है।।

(क्रमशः)

संबोधि

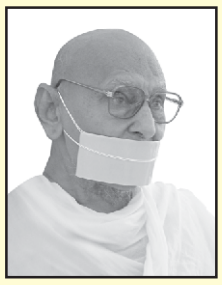

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

बंध-मोक्षवाद

मेघः प्राह

(१) किं बंधः किं च मोक्षस्तौं, जायेते कथमात्मनाम्।
तदहं श्रोतुमिच्छामि, सर्वदर्शिन्! तवान्तिके।।

मेघ बोला–हे सर्वदर्शिन्! बंध किसे कहते हैं? मोक्ष किसे कहते हैं? आत्मा का बंधन कैसे होता है और मुक्ति कैसे होती है–यह मैं आपसे सुनना चाहता हूँ।

भगवान् प्राह

(२) स्वीकरणं पुद्गलानां, बंधो जीवस्य भण्यते।
अस्वीकारः प्रक्षयो वा, तेषां मोक्षो भवेद् ध्रुवम्।।

भगवान् ने कहा–आत्मा के द्वारा पुद्गलों का जो ग्रहण होता है, वह बंध कहलाता है। जिस अवस्था में पुद्गलों का ग्रहण नहीं होता और गृहीत पुद्गलों का क्षय हो जाता है, उस स्थिति का नाम मोक्ष है।

(३) प्रवृत्त्या बद्ध्यते जीवो, निवृत्या च विमुच्यते।
प्रवृत्तिर्बन्धहेतुः स्यात्, निवृत्तिर्मोक्षकारणम्।।

प्रवृत्ति के द्वारा जीव कर्मों से आबद्ध होता है और निवृत्ति के द्वारा वह कर्मों से मुक्त होता है। प्रवृत्ति बंध का हेतु है और निवृत्ति मोक्ष का।

(४) प्रवृत्तिरास्रवः प्रोक्तो, निवृत्तिः संवरस्तथा।
प्रवृत्तिः पञ्चधा ज्ञेया, निवृत्तिश्चापि पञ्चधा।।

प्रवृत्ति आस्रव है और निवृत्ति संवर। प्रवृत्ति के पाँच प्रकार हैं और निवृत्ति के भी पाँच प्रकार हैं।

महावीर दुःख और दुःख मुक्ति का छोटा सा सूत्र बता रहे हैं। वे कहते हैं–'कामना दुःख है। कामना के पार चले जाओ, दुःख से छूट जाओगे–**'कामे कमाहि, कमियं खु दुक्खं।'** प्रवृत्ति का जन्म इच्छा–राग-द्वेष से होता है। यही बंधन है। जब उन पुद्गलों की अवस्थिति संपन्न होती है तब वे सुख-दुःख के रूप में प्रकट होते हैं। और फिर मनुष्य तदनुरूप प्रवृत्ति में संलग्न हो जाते हैं। इस भवचक्र का उन्मूलन होता है अप्रवृत्ति-निवृत्ति से। जिसे दुःख-मुक्ति प्रिय है उसे निवृत्ति का प्रयोग भी सीखना चाहिए।

प्रवृत्ति के पाँच प्रकार हैं और निवृत्ति के भी पाँच प्रकार हैं। प्रवृत्ति बाँधती है और निवृत्तिमुक्त करती है। प्रवृत्ति मनुष्य की चिरसंगिनी है। उससे छूटना सहज नहीं है, किंतु बिना छूटे बंधन-मुक्ति भी संभव नहीं है। साधना का लक्ष्य ही है–दुःख से मुक्त होना, निर्वाण को प्राप्त करना। उसमें बाधक हैं–ये पाँच प्रवृत्तियाँ। ये पाँचों ही तपोमयी हैं। इनसे जकड़ा हुआ व्यक्ति सत्य का दर्शन नहीं कर सकता। वह अनवरत बेहोशी का जीवन जीता है। जिसे कभी यह बोध भी नहीं होता कि मेरा जन्म क्यों है? मैं कौन हूँ? एक विचारक ने कहा है–'यदि विश्वविद्यालय लड़कों को मनुष्य नहीं बना सकते तो उनके अस्तित्व का कोई लाभ नहीं है। लड़के-लड़कियों को पहले यह मालूम होना चाहिए कि वे क्या है? और किस उद्देश्य के लिए उनको जीना है?

प्रवृत्तियों के विश्लेषण में उतरने से पहले एक बात और समझ लेनी चाहिए कि प्रवृत्ति मात्र बाधक नहीं है। निवृत्ति के पथ पर व्यक्ति जब आरूढ़ होता है तब उससे पहले भी प्रवृत्ति चलती है, किंतु वह बाधक नहीं बनती क्योंकि उस प्रवृत्ति की दिशा भटकाव वाली नहीं है। वह निवृत्ति के अभिमुख है। उसकी अंतिम परिणति निवृत्ति है। जिस प्रवृत्ति का प्रवाह निवृत्ति के अभिमुख नहीं होता वह प्रवृत्ति मनुष्य को स्वयं से निरंतर दूर ले जाती है। स्वयं से दूर होना ही संसार है।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

(३) चारित्र मार्ग

प्रश्न-२३: चारित्र की अल्पाबहुत्व का क्या क्रम है?

उत्तर : सबसे कम सूक्ष्म संपराय, उससे संख्यात गुण अधिक परिहार विशुद्धि, उससे संख्यात गुण अधिक यथाख्यात, उससे संख्यात गुण अधिक छेदोपस्थापनीय, उससे संख्यात गुण अधिक सामायिक चारित्र वाले हैं।

प्रश्न-२४: चारित्र कौन से क्षेत्र में होता है?

उत्तर : सामायिक, सूक्ष्म संपराय व यथाख्यात पंद्रह कर्मभूमि में तथा अवशिष्ट दो चारित्र पाँच भरत, पाँच एरावत कुल दस क्षेत्रों में ही होता है। साहरण (अपहरण) की अपेक्षा परिहार विशुद्धि को छोड़कर शेष चार का अढ़ाई द्वीप क्षेत्र है। परिहार विशुद्धि चारित्र संपन्न मुनियों का साहरण नहीं होता। सूक्ष्म संपराय व यथाख्यात चारित्र वालों का वैसे साहरण तो नहीं होता, पर इन चारित्र की प्राप्ति से पूर्व उनका साहरण हो सकता है। वहीं उन्हें ये चारित्र प्राप्त हो जाते हैं। यथाख्यात संपन्न मुनि के जब केवली समुद्घात होता है, तब उनका क्षेत्र पूरा लोकव्यापी हो जाता है।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

आचार्य देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण

आचार्य देवर्द्धिगणी का नाम जैन इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। उन्होंने प्रकीर्ण आगमज्ञान को स्थायित्व प्रदान करने के लिए श्रुतलेखन का महत्त्वपूर्ण कार्य मौलिक सूझ-बूझ से किया, उस कार्य को समय की घनी परतें भी ढक न सकेंगी।

लोकश्रुति के आधार पर देवर्द्धिगणी सौराष्ट्र नरेश अरिमर्दन के राजसेवक कामर्द्धि क्षत्रिय के पुत्र थे। उनकी माता का नाम कलावती था। माता ने ऋद्धि संपन्न देव को स्वप्न में देखा था। उसी स्वप्न के आधार पर पुत्र को देवर्द्धि संज्ञा से अभिहित किया गया।

आगम-कार्य–दुष्काल की काली घटाएँ घिर आईं। उस समय अनेक श्रुतधर काल-कवलित हो गए एवं श्रुत की बहुत क्षति हुई। दुष्काल की समाप्ति के बाद वल्लभी में जैन संघ एकत्रित हुआ। विशिष्ट वाचनाचार्य, नानागुणालंकृत श्री देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण श्रमणसंघ के अध्यक्ष थे।

श्रमण सम्मेलन में समग्र आगम-पाठों का श्रमणों की स्मृति से संकल्प हुआ एवं श्रुत को स्थायित्व प्रदान करने हेतु उसे लिपिबद्ध किया गया। आगम-लेखन का कार्य आचार्य आर्यरक्षित के युग में भी अंशतः प्रारंभ हो चुका था।

आचार्य स्कंदिल और आचार्य नागार्जुन के समय में भी आगम लिपिबद्ध होने के उल्लेख मिलते हैं पर देवर्द्धिगणी के नेतृत्व में समग्र आगमों का जो व्यवस्थित संकलन एवं लिपीकरण हुआ, वह अपूर्व था, अतः परंपरा से वह श्रेय आचार्य देवर्द्धिगणी को है।

वल्लभी नगरी में देवर्द्धिगणी प्रमुख श्रमण संघ ने वी०नि० ९८० (वि०सं० ५१०) में आगमों को लिपिबद्ध किया था।

आगम-वाचना के समय स्कंदिली एवं नागार्जुनीय उभय वाचनाएँ देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण के सक्षम थीं। नागार्जुनीय वाचनाओं के प्रतिनिधि आचार्य कालक (चतुर्थ) थे। स्कंदिली वाचना के प्रतिनिधि देवर्द्धिगणी स्वयं थे। उभय वाचनाओं में पूर्ण समानता नहीं थी। देवर्द्धिगणी ने श्रुत संकलन कार्य में अत्यंत तटस्थ नीति से काम किया। पूर्व वाचनाकार आचार्य स्कंदिल की वाचना को प्रमुखता प्रदान कर तथा नागार्जुनीय वाचना को पाठांतर के रूप में स्वीकार कर उदारता और गंभीरता का परिचय दिया तथा जैन संघ को विभक्त होने से बचा लिया।

देवर्द्धिगणी ने दर्शन एवं न्याय के युग को आगम युग के साथ अपनी साहित्य-धारा के माध्यम से जोड़ा। नंदीसूत्र इसी दिशा का एक प्रयत्न है।

जैन शासन आचार्य देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण का युग-युग तक आभारी रहेगा। आगम-लेखन कार्य से उन्होंने वीतराग-वाणी को दीर्घकालता प्रदान की है एवं जैन आगम निधि को समुचित संरक्षण दिया है। उनके इस प्रयत्न के अभाव में श्रुतनिधि का जो आज रूप प्राप्त है वह नहीं होता।

देवर्द्धिगणी अंतिम पूर्वधर थे। देवर्द्धिगणी के स्वर्गस्थ होने के साथ पूर्वज्ञान-धारा का लोप हो गया। देवर्द्धिगणी वीर निर्वाण की प्रथम सहस्राब्दि के आगम-निधि के महान संरक्षक आचार्य थे।

गणाधिपति गुरुदेव तुलसी ने व्यवहार बोध नामक ग्रंथ में लिखा है–

जिनशासन के चिर जीवन का
आगम ही मौलिक आधार।
रहा सुरक्षित उसमें गणिवर–
'देवर्धी' का अति उपकार।।

शुभ भविष्य के प्रवर पृष्ठ पर,
अगर नहीं होता आलेख।
अतुल अनुत्तर ज्ञान-राशि वह,
बन जाती पानी की रेख।।

(व्यवहार बोध–८१/८२)

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
17 - 23 जनवरी, 2022

✦ *हमारे जीवन में अपेक्षानुसार परिवर्तन भी उपयोगी होता है तो मूल्यवती मौलिकता भी सुरक्षित रहनी चाहिए।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

प्रभु पार्श्व जन्म कल्याणक महोत्सव के विविध आयोजन

गदग

क्षमा के अवतार भगवान पार्श्वनाथ के जन्म कल्याणक का कार्यक्रम शासनश्री साध्वी सोमलता जी के सान्निध्य में दादर तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी रक्षितयशा जी ने गीत का संगान मधुर स्वर लहरियों में किया। साध्वी संचितयशा जी ने मंत्र शब्द की महिमा बताते हुए मंत्रों का उच्चारण करवाया। साध्वी शकुंतला कुमारी जी, साध्वी जागृतप्रभा जी ने गीत प्रस्तुत किया।

शासनश्री साध्वी सोमलता जी ने भगवान पार्श्व के जीवन-दर्शन को सरस शैली में प्रस्तुत करते हुए कहा कि पार्श्वनाथ भगवान तीर्थंकर हैं, नायक हैं, प्रवर्तक हैं। उनके लिए पुरुषादाणीय शब्द भी प्रचलित है। साध्वीश्री जी ने एक वर्ष के लिए सभी भाई-बहनों को खामेमि सव्व जीवे—सूत्र का आत्मचिंतन करने का आह्वान किया। इस कार्यक्रम में तेरापंथ सभा, दादर, युवक परिषद एवं महिला मंडल के पदाधिकारीगण के साथ श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

राजलदेसर

साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में २३वें तीर्थंकर प्रभु पार्श्वनाथ भगवान का जन्म कल्याणक दिवस मनाया गया। नमस्कार महामंत्र एवं भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति के साथ शुरू हुए कार्यक्रम में साध्वीश्री जी ने कहा कि भगवान पार्श्वनाथ का स्मरण हमारे जीवन को आनंदमय कर देता है। उपसर्गहर स्तोत्र का जप जीवन के समस्त दुःखों को, विघ्न-बाधाओं को दूर कर देता है। प्रभु पार्श्व के मंत्र, स्तोत्र, स्तुति हमारे जीवन में दुर्भाग्य को दूर कर सौभाग्य को बढ़ाते हैं। सुख-शांति का वरदान दिलाते हैं।

कार्यक्रम में महाप्रभावक उवसर्गहर स्तोत्र महा जप अनुष्ठान और पार्श्वनाथ स्तुति का समायोजन हुआ। साध्वीवृंद ने सामुहिक रूप से गीतिका का संगान किया।

तेरापंथ भवन में आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम में दूसरे दिन साध्वीश्री जी ने कहा कि भगवान के जन्म दिवस पर नो केक, नो कैंडल, नो बैलून। केक, कैंडल, बैलून हमारी संस्कृति नहीं है। हम भगवान का अभिनंदन संकल्पों के साथ करें। त्याग-प्रत्याख्यान के साथ भगवान का जन्म कल्याणक दिवस मनाएँ।

कार्यक्रम में डॉ० साध्वी परमयशा जी, साध्वी धर्मयशा जी, साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी एवं साध्वी कुमुदप्रभा जी ने गीत, कविता एवं वक्तव्य के माध्यम से भगवान पार्श्व जिनेश्वर के प्रति अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम में रीना बैद, चमेली कुंडलिया ने अपनी मधुर स्वर लहरियों के साथ कार्यक्रम को आनंदमय बना दिया। कई श्रावक-श्राविकाओं ने उपवास, एकासन किए।

डोंबिवली (मुंबई)

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप डोंबिवली ने जैन धर्म के २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ भगवान के जन्म कल्याणक के अवसर पर प्रभु पार्श्व प्रणति कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जैन धर्म में इस दिन को विशेष माना जाता है। पूरे भारत में इसी दिन जैन धर्म के २३वें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान का जन्म कल्याणक मनाया जाता है। इस उपक्रम के संयोजक भरत कच्छारा एवं सह-संयोजक जयेश धाकड़ की मेहनत से उपवास के इस अनुष्ठान में ११६ उपवास संपन्न हुए।

उपवास के उपरांत सामुहिक पारणा भवन में रखा गया। जिसके प्रायोजक के रूप में प्रातः प्रार्थना ग्रुप ने स्वीकृति प्रदान की। तेयुप अध्यक्ष सुरेश बैद से प्रायोजक एवं सभी तपस्वी के प्रति आभार व्यक्त किया।

ज्ञानशाला शिशु संस्कार परीक्षा

नालासोपारा (मुंबई)।

ज्ञानशाला में केंद्रीय स्तर पर शिशु संस्कार बौद्ध की परीक्षा का आयोजन हुआ। २१ ज्ञानार्थियों ने परीक्षा दी। पाँच प्रशिक्षक बहनों ने परीक्षा ली। कुल ६ प्रशिक्षिका बहनों की उपस्थिति रही। सभा के मंत्री लक्ष्मीलाल मेहता व सभा के सहमंत्री पारस बाफना की विशेष रूप से उपस्थिति रही। परीक्षा देने वाले सभी बच्चों को पारितोषिक वितरण किए गए।

ज्ञानशाला वार्षिक परीक्षा संपन्न

पर्वट पाटिया।

तेरापंथ भवन में शिशु संस्कार बोध भाग-१ से ५ तक की मौखिक परीक्षा संनन्न हुई, जिसमें पर्वत पाटिया ज्ञानशाला के ६५ ज्ञानार्थियों ने भाग लिया। जिसमें भाग-१ से २२, भाग-२ में १४, भाग-३ में १४, भाग-४ में ८ और भाग-५ में ७ ज्ञानार्थियों ने परीक्षा दी। परीक्षा प्रश्न-पत्र सभा मंत्री भगवती परमार द्वारा खोला गया।

इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष चंद्रप्रकाश परमार, महिला मंडल मंत्री मधु पुगलिया, तेयुप मंत्री भरत जैन, मुख्य प्रशिक्षिका प्रिया पुगलिया, ज्ञानशाला संयोजक प्रवीण ओस्तवाल, रवि मालू, हरीश बाफना, यश सिंघवी एवं ज्ञानशाला प्रशिक्षिका बहनें उपस्थित थीं। नमस्कार महामंत्र एवं मंगलपाठ से परीक्षा की शुरुआत की गई एवं परिषद अध्यक्ष चंद्रप्रकाश परमार ने अपने वक्तव्य में सभी विद्यार्थियों को सफलता की शुभकामनाएँ प्रेषित की।

ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा

टिटिलागढ़।

टिटिलागढ़ ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा तेरापंथ भवन में पूरे हर्ष और उत्साह के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हुई। नमस्कार महामंत्र तथा गुरु वंदना के पश्चात ज्ञानशाला प्रशिक्षिका सुंदरी जैन तथा ज्ञानशाला कोर कमेटी सदस्य गौतम जैन के हस्ताक्षर के बाद प्रश्नपत्र खोले गए। ३७ ज्ञानार्थियों ने परीक्षा दी। जिसमें ३१ बच्चों ने ऑफलाइन एवं ६ बच्चों ने ऑनलाइन परीक्षा दी। भाग-१ की परीक्षा संतोष जैन एवं सुभद्रा जैन, भाग-२ भावना जैन, भाग-३ सरोज जैन एवं खुशबू जैन, भाग-४ सुंदरी जैन एवं संयुक्ता जैन, भाग-५ कृष्णा जैन—इन प्रशिक्षिका बहनों ने बच्चों की परीक्षा ली।

ज्ञानशाला के विविध आयोजन

त्रिदिवसीय ज्ञानशाला शिविर का आयोजन

गंगाशहर।

तेरापंथी सभा, गंगाशहर द्वारा संचालित ज्ञानशाला का त्रिदिवसीय शिविर के समापन के अवसर पर मुनि शांतिकुमार जी ने अपने उद्बोधन में छोटी-छोटी कहानियों के माध्यम से उपस्थित शिविरार्थियों को ज्ञानार्जन के साथ-साथ संस्कारों को पुष्ट करने की बात कही। उन्होंने कहा कि ज्ञानशाला पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रदत्त अनुपम अवदान है। ज्ञानशाला के माध्यम से ज्ञानार्थियों में संस्कारों का बीजारोपण किया जाता है। तेरापंथी सभा के मंत्री रतनलाल छलाणी ने कहा कि ज्ञानार्थियों की प्रस्तुतियाँ ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं के अथक प्रयास अभिभावकगण की सजगता को बयां करती है। तेयुप मंत्री देवेंद्र डागा ने बताया कि सौम्या भूरा व युवराज सिपानी को परफॉर्मर ऑफ द शिविर घोषित किया गया। क्विज प्रतियोगिता में भाग-२ में मैत्री डाकलिया व यश राखेचा, भाग-३ में नुपुर नाहर, भाग-४ में दिव्यांश पुगलिया, भाग-५ में भाविनी संचेती विजेता रहे।

गायन प्रतियोगिता में भाग-१ में हिमांक्षी छाजेड़, नैतिक फलोदिया, भव्य जैन, भाग-२ में यश राखेचा, लक्ष्या बोथरा, सौम्या भूरा, जिव्या बोथरा, भाग-३ में कौशल सोनी, जिनेश नाहटा, जिज्ञांशु बोथरा, भाग-४ में दिव्यांश पुगलिया, भाग-५ में भाविनी संचेती, भव्या ललवाणी ने विजेता स्थान प्राप्त किए।

शिविर में तेयुप, गंगाशहर के सहमंत्री भरत गोलछा, किशोर मंडल संयोजक कुलदीप छाजेड़, अरिहंत गीड़िया ने सेवाएँ प्रदान की। शिविर में प्रशिक्षिका रुचि छाजेड़, सुनीता डोसी, अंजु बोथरा, मोनिका संचेती, सरिता आंचलिया, श्रीया गुलगुलिया, प्रेम बोथरा, जयश्री भूरा, ममता बच्छावत, रक्षा बोथरा ने ज्ञानार्थियों को प्रशिक्षण दिया। कार्यक्रम में ज्ञानशाला संयोजक जतन संचेती, निर्मल सुराणा, तेयुप सहमंत्री भरत गोलछा सहित अनेक गणमान्य वयक्ति उपस्थित रहे।

ज्ञानशाला कार्यक्रम

कोलकाता।

कोलकाता में लगभग सभी क्षेत्र में शिशु संस्कार की परीक्षा-२०२२ की विषम परिस्थिति में भी सभा के अध्यक्ष-मंत्री, स्थानीय संयोजक एवं मुख्य प्रशिक्षिका अन्य प्रशिक्षिकाओं की उपस्थिति में सुचारु रूप से संपन्न हुआ। सभी के मूल्यवान समय और परिश्रम के द्वारा ही यह नजारा दृष्टिगोचार हुआ। कोलकाता में १५ सेंटरों में ४३० बच्चों ने परीक्षा में भाग लिया। यह एक बहुत बड़ी संख्या है। पेपर ऑनलाइन एवं कुछ जगह ऑफलाइन भी हुआ। लगभग सभी जगह हमारे क्षेत्र संयोजक प्रकाश दुगड़, खुशबू, सुजाता सुनीता, मंजु सरीता उपस्थित थे।

आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया, दक्षिण कोलकाता, दक्षिण हावड़ा, उत्तर हावड़ा एवं लेकटाउन में परीक्षा केंद्र की सार-संभाल किया। सह-संयोजक संजय पारख, लिलुआ, बॉली वेलुड अपने क्षेत्र दक्षिण हावड़ा में उपस्थित थे। प्रकाश दुगड़ मध्य-कोलकाता एवं दक्षिण-कोलकाता में उपस्थित थे। अंजु एवं मालचंद के मार्गदर्शन में सभा परिवार और पूरी टीम का सहयोग ज्ञानशाला परिवार का सौहार्द से यह निर्जरा का महान कार्य सराहनीय रहा।

ज्ञानशाला कार्यक्रम

बैंगलोर।

शिशु संस्कार परीक्षा केंद्र द्वारा आयोजित मौखिक परीक्षा का आयोजन बैंगलोर के ३० उपनगर में जहाँ ज्ञानशाला चल रही है वहाँ ऑन लाइन एवं ऑफलाइन के माध्यम से बच्चों की मौखिक परीक्षा का आयोजन किया गया। हर क्षेत्र में प्रशिक्षक बहनों ने परीक्षा में संभागी बनते हुए बच्चों की परीक्षा ली। लगभग ४५० बच्चे मौखिक परीक्षा में संभागी बने। शिशु संस्कार भाग-१ से भाग-५ तक परीक्षा का आयोजन हुआ।

तेरापंथ सभा, बैंगलोर-गांधीनगर के तत्त्वावधान में आयोजन किया गया और तेरापंथ सभा के द्वारा सभी बच्चों को सर्टिफिकेट एवं पुरस्कार से सम्मान किया गया। परीक्षा में संभागी बने हनुमंतनगर, वीवीपुरम, त्यागराज नगर, बसवनगुड़ी, चामराजपेट, एसआर नगर, सरक्की गेट, जयनगर, टेनरी रोड शेषाद्रीपुरम, विल्सन गार्डन, शांति नगर, कबनपेट, आरटी स्ट्रीट, गांधीनगर, मागड़ी रोड, राजाजीनगर पार्क वेस्ट, कामाक्षी पाल्या, होसकोटे, बन्नेरघट्टा, आरआर नगर, केंगेरी, टी-दासरहल्ली, ईटा गार्डन, त्यागराज नगर।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुरेश दक, मंत्री नवनीत मूथा एवं संपूर्ण टीम का ज्ञानशाला को भरपूर सहयोग मिला। कर्नाटक आंचलिक संयोजक माणक संचेती, सह-संयोजक सुरेश नाहर, मुख्य प्रशिक्षिका मंजु गन्ना, क्षेत्रीय संयोजिका नीता गादिया, बबीता चोपड़ा, चेतना वेदमूथा, लता गांधी व सभी क्षेत्रों की ज्ञानशाला संयोजिका बहनें उपस्थित थीं।

नव वर्ष पर वृहद् मंगलपाठ के आयोजन

नव वर्ष प्रारंभ होने पर कषाय कम करें

नोखा।

अंग्रेजी नव वर्ष २०२२ प्रारंभ हो रहा है। व्यक्ति चिंतन करे कि मुझमें राग-द्वेष, घृणा, ईर्ष्या घट रही है क्या? मैंने कितनी भलाई, सेवा की। अब मुझे आध्यात्मिक साधना करनी है। जीवन का रूपांतरण करके कुछ उज्ज्वलता लानी है। मंगलभावना व जप का प्रयोग लाभदायी होता है। ये उद्गार शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने नव वर्ष प्रारंभ होने पर वृहद् मंगलपाठ कहते हुए कहे।

साध्वी कनकरेखा जी ने कहा नव वर्ष सबसे लिए कल्याणकारी सिद्ध हो। नोखा में बहुश्रुत साध्वी का विराजना भाग्योदय बताया। विशेष ज्ञानाराधना करें, प्रेरणा दी।

साध्वी गुणप्रेक्षाश्री जी ने संयम दीक्षा के ४२वें प्रवेश पर साध्वी राजीमती जी ने आशीर्वाद दिया और सुखानुभूति अनुभव बताया।

महासभा प्रभारी इंदरचंद बैद, डॉ० प्रेम सुख मरोठी, गोपाल लूणावत, तेयुप अध्यक्ष रूपचंद बैद, कार्यकर्ता हंसराज भूरा, लाभचंद छाजेड़, कुसुम छाजेड़, नगरपालिका उपाध्यक्ष निर्मल भूरा सभी ने नव वर्ष पर शुभकामनाएँ व्यक्त की।

नव वर्ष पर वृहद मंगलपाठ

अमरनगर।

तेरापंथ समाज सरदारपुरा द्वारा मुनि तत्त्वरुचि जी के सान्निध्य में आयोजित हुए महामांगलिक कार्यक्रम में मुनि तत्त्वरुचि जी ने उपस्थित श्रावक समाज को महामांगलिक के साथ-साथ नूतन वर्ष के लिए विविध संकल्प कराए।

नूतन वर्ष मंगलकारी रहे, हम चार कषाय यथा—क्रोध, मान, माया व लोभ का नियंत्रण करें। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, सरदारपुरा, तेयुप, तेमम, टीपीएफ, अणुव्रत समिति के सदस्यों ने नववर्ष के प्रारंभ पर मुनिश्री से आशीर्वाद लिया।

नव वर्ष की प्रभात वेला में होगी मंगल मंत्रोच्चार की वर्षा

कुम्भकोणम।

भारत को आजाद हुए ७४ वर्ष हो गए पर आज भारत स्वतंत्र होने के बाद भी परतंत्र के घेरे में है ओर वह घेरा है—भ्रष्टाचार, अनैतिकता। आज हर व्यक्ति आगे बढ़ना चाहता है और आगे बढ़ने के लिए वह अप्रमाणिक तौर-तरीकों को अपना लेता है। छल-कपट का सहारा लेकर वह सबसे पहले लक्ष्य प्राप्त करना चाहता है। निम्न विचार मुनि अर्हत् कुमार जी ने व्यक्त किए।

मुनिश्री ने आगे कहा कि भगवान महावीर ने कहा—माया सद्गुणों की मित्रता का नाश कराती है। महान वही होता है जो कठिन परिस्थितियों में भी ईमान को नहीं बेचता जो ईमान का सम्मान करता है, उसका जग सम्मान करता है।

स्थानकवासी समाज की भावना को स्वीकार कर ब्रह्मऋषि ने जैन भवन पधारकर वहाँ उपस्थित लोगों को संबोधित किया।

मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि हर व्यक्ति को सत्संग के रंग में रंगना चाहिए, क्योंकि सत्संग में आने से पापी पावन बन जाता है, उसका जीवन स्वर्ण के समान निखर जाता है और वह अपनी आत्मा को परमात्मा बना लेता है। मुनि जयदीप कुमार जी ने सत्संग पर प्रकाश डाल हुए गीत का संगान किया। स्थानकवासी महिला मंडल की ओर से गीतिका की प्रस्तुति हुई। मुनिश्री की इस कृपा से सब भाव-विभोर हो गए। कुलदीप मेहता ने स्वागत भाषण दिया।

नव वर्ष के शुभ संकल्प फलवान बनें

तिरुपुर।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि नए वर्ष का प्रवेश सबके लिए सौभाग्यशाली, स्वास्थ्यकारी, सुखकारी, शांतिमय और अध्यात्ममय बने। सकारात्मक और सृजनात्मक चेतना का विकास हो। हम सौभाग्यशाली हैं कि जिन्हें एक आचार्य की पावन और विकासमय नेतृत्व प्राप्त हैं जीवन के हर मोड़ पर सफलता प्राप्त करते रहें। २०२२ का वर्ष नए इतिहास का सृजन करें, ऐसी हमारी कामना है। संघ, समाज और परिवार में विकास के नए उन्मेष खुलते रहें।

साध्वीश्री जी द्वारा प्रभावक जैन मंत्रों के साथ वृहद् मंगलपाठ का श्रवण कर जनसमुदाय ने हर्ष एवं आनंद का एहसास किया।

साध्वीवृंद द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी सिद्धयशा जी, साध्वी राजुलप्रभा जी, साध्वी चैतन्यप्रभा जी एवं साध्वी शौर्यप्रभा जी ने साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी द्वारा रचित संकल्प गीत का संगान किया। महिला मंडल एवं कन्या मंडल ने हैप्पी न्यू ईयर की मोहक प्रस्तुति दी। तेयुप उपाध्यक्ष सोनू डागा ने शुभकामना गीत प्रस्तुत किया। तेमम अध्यक्ष सीमा श्यामसुखा ने अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ सभा अध्यक्ष प्रदीप बोथरा ने विभिन्न क्षेत्रों से समागत श्रावक समाज का स्वागत किया। मैसूर तेरापंथ सभा अध्यक्ष शांतिलाल कटारिया, मंत्री अशोक दक एवं तेरापंथ ट्रस्ट के पूर्व अध्यक्ष कैलाश देरासरिया ने कहा कि साध्वीश्री जी का ऐतिहासिक चातुर्मास हम मैसूरवासियों के लिए अविस्मरणीय बन गया। भिक्षु भजन मंडली ने मंगल भावना गीत की प्रस्तुति दी। तेमम की मंत्री वनिता बाफना ने अपने विचार व्यक्त किए।

संयोजकीय वक्तव्य में साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी ने कहा कि आज मंगल संकल्पों के साथ नया प्रभात आया है। संकल्पों को सच में ढालने का प्रयास हो। नव वर्ष शुभ संभावनाओं को लेकर उपस्थित हुआ है, हम सभी शुभ भविष्य का निर्माण करते रहें। मैसूर, कोयंबटूर, ईरोड आदि क्षेत्रों के लोगों की विशेष उपस्थिति रही।

नव वर्ष पर वृहद् मंगलपाठ

कांदिवली।

साध्वी राकेश कुमारी जी एवं सहवर्ती साध्वीवृंद द्वारा उपस्थित धर्मप्रेमी श्रावक समाज को वृहद मंगलपाठ प्रदान किया गया। साध्वी मलयविभा जी, साध्वी विपुलयशा जी एवं साध्वी चैतस्वीप्रज्ञा जी द्वारा मंगलाचरण द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत हुई। तत्पश्चात साध्वी राकेश कुमारी जी ने अपने उद्बोधन एवं वृहद मंगलपाठ द्वारा उपस्थित श्रावक समाज में नव ऊर्जा का संचरण किया।

मुंबई चातुर्मास-२०२३ को ध्यान में रखते हुए साध्वीश्री जी ने समाज को उत्कर्ष एवं उत्थान कार्यक्रमों की जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम में श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के अध्यक्ष के०एल परमार, मुंबई सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष विनोद बोहरा, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की निवर्तमान मंत्री तरुणा बोहरा एवं तेयुप, कांदिवली अध्यक्ष मनीष रांका ने भी अपने विचार रखते हुए सभी को नव वर्ष की मंगलाकमनाएँ प्रदान की एवं साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

नव वर्ष कार्यक्रम

टैंभूर्णी (महाराष्ट्र)।

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में टैंभूर्णी, महाराष्ट्र में नववर्ष का आगाज हुआ। साध्वीश्री निर्वाण श्री जी अपनी सहवर्ती साध्वियों के साथ हनुमान वाड़ी से विहार कर टैंभूर्णी पधारे। वहाँ दिलीप धोका के फार्महाउस पर मंत्रोच्चार का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम में उपस्थित संभागियों को संबोधित करते हुए साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा—सन् २०२२ का यह नववर्ष सबके भीतर नव उल्लास, नई चेतना और नई ऊर्जा का संचार करे, यही अभिलाषा है।

साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में कहा कि इस वर्ष हमें कामयाबी की नई परिभाषा लिखनी है। अपने संकल्पों में बल भरते हुए विकास की नई ऊँचाइयों को छूना है। पुणे, सोलापुर व हैदराबाद तथा टैंभुर्णी से भाई-बहन विशेष रूप से ऊर्जा पाने आए हैं। इस अवसर पर साध्वी लावण्यप्रभा जी तथा साध्वी कुंदनयशा जी ने गीत की प्रस्तुति दी।

नव वर्ष के नए प्रभात में पश्चिम महाराष्ट्र के मंत्री कैलाश कोठारी, अभातेयुप के बारह व्रत कार्यशाला के राष्ट्रीय संयोजक मनोज संकलेचा, तेयुप पूणे के अध्यक्ष धर्मेन्द्र चोरड़िया व पूर्व अध्यक्ष हितेश श्रीश्रीमाल, हैदराबाद सेवा प्रकोष्ठ प्रभारी प्रेम बैंगानी, तेयुप, हैदराबाद के उपाध्यक्ष प्रमोद भंडारी, कार्यकर्ता सुजीत कोठारी तथा टैंभूर्णी से रोशनी धोखा ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

इस अवसर पर पुणे तेरापंथ सभा के अध्यक्ष महेंद्र मरलेचा, पूर्व अध्यक्ष आदि ने साध्वीश्री जी की उपासना की तथा २०२२ का मर्यादा महोत्सव पुणे करवाने की पुरजोर अर्ज की। टैंभूर्णी के सभा अध्यक्ष विकास कोठारी, उत्तम कोठारी आदि अनेक भाई-बहनों ने भी दूसरे सत्र में उपासना का लाभ लिया।

वृहद मंगलपाठ

गुवाहाटी।

साध्वी संगीतश्री जी एवं उनकी सहवर्तिनी साध्वी शांतिप्रभा जी, साध्वी कमलविभा जी व साध्वी मुदिताश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा एवं तेमम के द्वारा नववर्ष के उपलक्ष्य पर स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल पर वृहद् मंगलपाठ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष झनकार दुधोड़िया ने सभी को नववर्ष की शुभकामनाएँ दी। महिला मंडल द्वारा सुमधुर गीतिका का संगान किया गया।

वृहद मंगलपाठ में साध्वीश्री जी के मंत्रोच्चार से संपूर्ण वातावरण भक्तिमय बन गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि नए वर्ष में नए संकल्पों के साथ आगे बढ़ें एवं धर्मसंघ की प्रभावना में योगभूत बनें। इस अवसर पर नगाँव, ग्वालपाड़ा, कृष्णई, धुबड़ी, गौरीपुर, आगोमनी, सिलचर, जोरहाट, शिलोंग, कूचबिहार, जयपुर, सूरत आदि क्षेत्रों से समागत श्रावक समाज ने मंगलपाठ का लाभ लिया।

कार्यक्रम में आचार्यश्री तुलसी शिक्षा प्रकल्प के अंतर्गत तत्त्वज्ञान की परीक्षा में राष्ट्रीय स्तर पर द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने पर शिलोंग की सुनीता सुराणा एवं पुखराज लुणावत को सभा द्वारा तुलसी स्मृति ग्रंथ भेंट कर सम्मान किया गया।

तेरापंथी सभा द्वारा समाज बंधुओं के सहयोग से आचार्य तुलसी सेवा प्रकल्प के तहत आयोजित टीकाकरण शिविर में सहयोग करने वाले सभी सदस्यों का सम्मान किया गया। इस प्रकल्प के संयोजक रितेश खटेड़ एवं बजरंग सुराणा के नेतृत्व में ३० हजार से ज्यादा लोगों का टीकाकरण किया गया। संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री निर्मल सामसुखा ने किया।

वृहद मंगलपाठ एवं आध्यात्मिक अनुष्ठान

गांधीनगर।

साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में मुकेश गादिया के निवास स्थान पर वृहद मंगल पाठ एवं आध्यात्मिक अनुष्ठान का आयोजन हुआ। साध्वी लावण्यश्री जी ने कहा कि जब-जब भी नया वर्ष आता है, सबमें अनूठा उत्साह, उल्लास, श्रद्धा, भक्ति और भावना का संगम देखने को मिलता है। कर्नाटक में उगादी, गुजरात में बेसता वर्ष और संपूर्ण विश्व में न्यू ईयर मनाने की परंपरा रही है।

साध्वी सिद्धांतश्री जी, साध्वी दर्शितप्रभा जी ने वर्ष २०१९ से २१ का सफरनामा संक्षिप्त में प्रस्तुत किया। साध्वी धैर्यप्रभा जी ने नव वर्ष पर गीत की प्रस्तुति दी। मोनिका गादिया ने अपने निवास स्थान पर सभी का स्वागत किया। गांधीनगर सभाध्यक्ष सुरेश दक ने सभी के प्रति मंगलकामना व्यक्त की।

इस अवसर पर अणुव्रत विश्व भारती के सहमंत्री कन्हैयालाल चिप्पड़, अणुव्रत समिति अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाड़, गांधीनगर सभा उपाध्यक्ष अभय कोठारी, सहमंत्री राजेंद्र बैद, कोषाध्यक्ष बाबूलाल बाफना, तेयुप गांधीनगर उपाध्यक्ष भेरूलाल पोखरना, तेयुप हनुमंतनगर अध्यक्ष धर्मेश कोठारी व अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधि व गणमान्य उपस्थित रहे।

मुकेश गादिया ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री नवनीत मूथा ने किया।

सेवा कार्य

विजयनगर।

तेरापंथी सभा द्वारा सेवा कार्य राजाजीनगर में स्थित तुंगभद्रा ओल्ड एज होम में हुआ। जहाँ पर वृद्ध लोगों की सेवा में तत्पर रहे सभा के पदाधिकारी। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष राजेश चावत ने सभी के प्रति मंगलकामना प्रेषित।

इस अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा लिखित ४ कन्नड़ भाषा में अनुवादित साहित्य को मुख्य प्रधान को भेंट किया। इसी क्रम में प्रायोजक सुभाष राहुल कुमार पोकरणा परिवार द्वारा इस कार्य में सहयोग मिला। संयोजक कैलाश गांधी का सहयोग रहा। आभार ज्ञापन मंत्री मंगल कोचर ने किया।

✦ *अणुव्रत का संदेश है जीवन में नैतिकता, इंद्रिय संयम तथा इच्छाओं का परिसीमन हो।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

फिट युवा-हिट युवा

शास्त्री नगर, दिल्ली।

तेयुप द्वारा 'फिट युवा-हिट युवा' कार्यक्रम का आयोजन शास्त्री नगर के डीडीए पार्क में रखा गया, जिसमें शास्त्री नगर क्षेत्र, शालीमार बाग क्षेत्र एवं आसपास के क्षेत्र के ४० से अधिक सदस्यों की सहभागिता रही।

कार्यक्रम में सभी युवा साथियों एवं किशोरों को प्रशिक्षण देने के लिए योग विज्ञान संस्थान से राज किशोर, अभिषेक गुप्ता और उनकी पूरी टीम उपस्थित थी। उन्होंने सभी साथियों को योग का प्रशिक्षण दिया और योग का जीवन में महत्त्व बताया। सभी ने इस योग कार्यक्रम को रोज करने का आग्रह भी किया।

कार्यक्रम में अभातेयुप सदस्य जतन श्यामसुखा, विकास चोरड़िया, तेयुप, दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष पुखराज लोढ़ा, वर्तमान अध्यक्ष विकास बोथरा, मंत्री सौरभ आंचलिया सहित तेयुप, दिल्ली के पदाधिकारीगण उपस्थित रहे।

आए हुए सभी साथियों का आभार ज्ञापन गौरव बच्छावत ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में शास्त्री नगर क्षेत्र के सह-संयोजक साहिल बोथरा, मानस बोथरा सहित अन्य सदस्यों का अथक श्रम रहा।

किशोर फिएस्टा का आयोजन

गंगाशहर।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप के निर्देशन में किशोर मंडल द्वारा तेरापंथ भवन में किशोर फिएस्टा २:० का आयोजन किया गया। किशोर मंडल संयोजक कुलदीप छाजेड़ ने बताया कि मुनि शांतिकुमार जी के मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शिक्षाविद् डॉ० पी०एस० वोहरा ने फीता खोलकर किशोरों के प्रबंधन में लगे मेले का अवलोकन किया। डॉ० पी०एस० वोहरा ने इस अवसर पर बच्चों और किशोरों से रोचक प्रश्न पूछे और हमेशा मुस्कुराते हुए प्रत्येक मंजिल को प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया।

डॉ० पी०एस० वोहरा का स्वागत महासभा, बीकानेर के अध्यक्ष जैन लूणकरण छाजेड़, तेयुप अध्यक्ष विजेंद्र छाजेड़ व किशोर मंडल संयोजक कुलदीप छाजेड़ ने किया। तेयुप मंत्री देवेंद्र डागा ने बताया कि मेले में आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान महामंत्री हंसराज डागा, तेरापंथी सभा, गंगाशहर अध्यक्ष अमरचंद सोनी, मंत्री रतन छल्लाणी, अभातेयुप सदस्य पीयूष लुणिया सहित, तेयुप पूर्व अध्यक्ष नवरतन बोथरा, तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष पवन छाजेड़, महिला मंडल अध्यक्ष ममता रांका, कविता चोपड़ा आदि गणमान्य जनों की उपस्थिति रही। किशोर मंडल प्रभारी चंचल चोपड़ा ने बताया कि इस अवसर पर किशोरों के लिए रोचक प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया, जिसमें कविता प्रतियोगिता में मुदित ललवाणी, क्विज प्रतियोगिता में पवन रांका, फोटोग्राफी में विनोद जैन विजेता रहे। मिस्टर किशोर के रूप में चेतन बोथरा का चयन किया गया।

किशोर मंडल सह-संयोजक दीपेश बैद ने बताया कि मेले में गेम्स, फूड जोन, लक्की ड्रॉ, सेल्फी पॉइंट, ट्रेडिंग स्टॉल आदि ढेर सारे कार्यक्रम आयोजित हुए। मेले में ज्ञानशाला के बच्चों के लिए फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, जिसमें राजस्थानी थीम पर ज्ञानार्थी बच्चों ने प्रतियोगिता में भाग लिया, जिसमें ज्ञानार्थी नुपुर नाहर विजेता रही।

तेयुप सहमंत्री भरत गोलछा ने बताया कि इस मेले में पूनमचंद आसकरण कमलचंद बोथरा परिवार ने सौजन्य प्रदान करवाकर किशोर साथियों का उत्साहवर्धन किया। धनपत भंसाली, महावीर फलोदिया, रोहित बैद, ऋषभ लालाणी, भरत गोलछा, गौरव डागा, अरुण नाहटा, चैतन्य रांका, गुनित आंचलिया, हर्ष छाजेड़, जयंत छाजेड़, रौनक बोथरा, सौरभ गीड़िया, अरिहंत गीड़िया, शोभित सेठिया आदि साथियों ने कार्यक्रम की तैयारियों को अंतिम रूप दिया।

कंबल वितरण कार्यक्रम

विजयनगर।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित सेवा, संस्कार और संगठन के अंतर्गत नर सेवा नारायण सेवा को महत्ता प्रदन करते हुए तेयुप एवं किशोर मंडल ने जरूरतमंद लोगों को कंबल वितरण किए।

इस कार्यक्रम में मंत्री विकास बांठिया, सेवा कार्य संयोजक सुशील पारख, किशोर मंडल संयोजक हेमंत पटावरी, किशोर मंडल के अन्य कई साथी उपस्थित रहे।

रक्तदान शिविर

सूरत।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, सूरत द्वारा ओमिक्रॉन संक्रमण की गंभीरता एवं ब्लड की अत्यधिक जरूरत को देखते हुए कॉन्फ्रेंस हाल, बोम्बे मार्केट, सहारा दरवाजा के पास, सूरत में नमस्कार महामंत्र के सामुहिक मंत्रोच्चार से रक्तदान शिविर का शुभारंभ किया गया। इस रक्तदान शिविर में बोम्बे मार्केट के व्यापारियों एवं तेयुप, सूरत के सदस्यों ने उत्साह के साथ रक्तदान किया एवं अपनी दुकान के सभी स्टॉफ को इसके लिए प्रेरित किया।

सभी के सहयोग से कुल ४६ यूनिट ब्लड डोनेशन हुआ। तेयुप, सूरत जैन संस्कार प्रभारी हिम्मत बम्ब एवं साथियों का विशेष सहयोग रहा। तेयुप के पदाधिकारियों के साथ एमबीडीडी राष्ट्रीय सहप्रभारी सौरव पटावरी, एमबीडीडी प्रभारी सतीश संकलेचा, तेजकरण मांडोत, पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्यों ने जागरूकतापूर्वक अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

तेयुप, सूरत अध्यक्ष गौतम बाफना ने सभी के रक्तदान एवं सभी सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर सम्मिलित होने का आह्वान किया। स्मीमेर ब्लड बैंक का सेवा हेतु सम्मान किया गया।

सेवा कार्य

राजराजेश्वरी नगर।

तेयुप ने तारा ओल्ड ऐज होम में निवासित वृद्धजनों तथा उनकी देखरेख करने वालों को राशन की सामग्री का वितरण किया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामुहिक नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ किया। परिषद अध्यक्ष सुशील भंसाली ने उपस्थित प्रायोजक परिवार सहित इस मौके पर मौजूद सभी सदस्यों का स्वागत किया।

प्रायोजक परिवार से दिलीप सुराणा ने सेवा कार्य की सराहना की। सेवा प्रभारी दीपक गोठी ने बताया कि जरूरत की सामग्री में आटा, दाल, चावल, दूध, बिस्किट, घी, तेल, मसाले आदि शामिल थे।

इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली, मंत्री विकास छाजेड़, संगठन मंत्री राकेश दुगड़, पूर्व अध्यक्ष गुलाब बांठिया, सेवा कार्य प्रभारी दीपक गोठी, सहप्रभारी सुपारस पटावरी एवं तेयुप सदस्य सुमित सुराणा ने अपने समय का विसर्जन कर सेवा कार्य में सहयोग किया। मंत्री विकास छाजेड़ ने सभी युवकों का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन सेवा कार्य प्रभारी दीपक गोठी ने किया।

सेवा कार्य

साउथ हावड़ा।

अभातेयुप निर्देशित तेयुप, साउथ हावड़ा द्वारा क्षेत्र के श्री शीतला विद्यालय में नव वर्ष की शुरुआत पर सेवा कार्य किया। कार्यक्रम का प्रारंभ परिषद ने सामुहिक मंगलाचरण के साथ किया। परिषद के अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने सभी का स्वागत किया। विद्यालय के लगभग ६५ बच्चों को सुबह का नाश्ता, मिठाई का वितरण परिषद के युवाओं एवं पारिवारिकजनों द्वारा किया गया। कार्यक्रम में उपाध्यक्ष ज्ञानमल लोढ़ा, सहमंत्री राहुल दुगड़, सामाजिक कार्य के संयोजक समित कुमार बैद, सह-संयोजक दीपक नखत, आदेश चोरड़िया सहित हितेंद्र बैद, मोहित कोठारी अमित चोरड़िया उपस्थित रहे।

परिवार से प्रकाश चोरड़िया ने परिषद के कार्यों की सराहना की और आभार जताया। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार सामाजिक कार्यों के पर्यवेक्षक अमित बेगवानी ने किया।

प्रभु महाश्रमण तुम मेरे अंतर के राम हो

● **साध्वी प्रबुद्धयशा** ●

साध्वी चंद्रिकाश्रीजी में गीत बनाने की अपनी कला थी। वे सामान्यतया गीत कम बनाती थीं। पर जब भी बनाती भावों की गहराई में डूबकर बनाती थीं। तपस्या आदि प्रसंगों पर वे गीत बनाती। किंतु श्रद्धेया साध्वीप्रमुखाश्रीजी के चयन दिवस पर उनका गीत बनाना निश्चित था। भीलवाड़ा में गुरुदेव की उन पर असीम कृपा बरस रही थी। श्रद्धेया साध्वीप्रमुखाश्री जी, मुख्य नियोजिकाजी एवं कई साध्वियाँ उन्हें बार-बार प्रेरित कर रही थीं। गुरुदेव इतनी कृपा करवा रहे हैं गुरुदेव पर गीत बनाओ। वे कहती–तहत्! भाव है। उनकी प्रबल इच्छा थी मैं गीत बनाऊँ। किंतु उनके स्वास्थ्य एवं मस्तिष्क की स्थिति उनका साथ नहीं दे रही थी। उन्होंने अपनी भावना साध्वी जिनप्रभाजी के पास रखी। साध्वीश्रीजी ने उनकी पसंदीदा राम (प्रभु पार्श्व देव चरणों में) में उनके भावों को पिरोकर उन्हें सुनाया तो वे भावविभोर हो गुनगुनाने लगी।

प्रभु महाश्रमण तुम मेरे, अंतर के राम हो।
तेरे भक्तों की सूची, में मेरा नाम हो।।
तुम महासमंदर प्रभुवर, मैं उसकी बूँद हूँ।
तुम कल्पवृक्ष गणवन के, मेरा विश्राम हो।।१।।
तुम महासुमेरु गुरुवर, मैं रजकण हूँ उसकी।
इसमें नित रमण करूँ मैं, पाऊँ निजधाम हो।।२।।

वे साध्वीश्रीजी के प्रति कृतज्ञ थीं। जब भी गुरु के विषय में प्रसंग बनता तो उनके नेत्र सजल हो जाते थे। उनकी गुरुभक्ति बेजोड़ थी। मुंबई में जब चिकित्सक उन्हें बल दे रहे थे। साध्वीश्रीजी! मस्तिष्क शरीर का महत्त्वपूर्ण अवयव है। आपको इस स्थिति में रेडिएशन लेना पड़ेगा अन्यथा बहुत ज्यादा कठिनाई होगी। आप हमारी बात मान लें। तब उन्होंने सिंहगर्जना करते हुए कहा–डॉक्टर साहब! मुझे तो भीलवाड़ा में मेरे गुरु के चरणों में जाना है। वे ही मेरा कल्याण करेंगे। मुझे अब यह चिकित्सा नहीं करानी है। डॉक्टर और मुंबई का श्रावक समाज विस्मित था। जब ११ अगस्त को उसने सुना कि साध्वीश्रीजी तो भीलवाड़ा पहुँच गई है। हम भीलवाड़ा क्या पहुँचे मानो उनकी पुण्याई शतगुणित हो गई। गुरुकृपा बरसने लगी। स्वयं साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने फरमाया–"इसी गुरुकृपा तो कोई सौभाग्यशाली ने ही मिलै है। चंद्रिकाश्रीजी! थे तो परम सौभाग्यशाली हो। गुरुदेव थां पर कित्ती महान कृपा करवा रह्या है।"

गुरुकृपा के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रसंग जो सदा-सदा के लिए अविस्मरणीय बन गए।

आंनै लेर आग्या

दिनांक ११ अगस्त को जब हम मुंबई से भीलवाड़ा गुरुचरणों में पहुँचे तब उनको देखते ही परमपूज्य आचार्यप्रवर ने आंतरिक प्रसन्नता के साथ कृपा करवाते हुए फरमाया–"जिनप्रभाजी! आंनै लेर आ गया।" साध्वीश्री ने कहा–गुरुदेव! आपकी शक्ति और इनकी गुरुभक्ति ही हमें यहाँ गुरुचरणों में ले आई। साध्वी चंद्रिकाश्रीजी ने निवेदन किया–गुरुदेव! आपश्री ने महती कृपा कर मुझे मंत्र प्रदान करवाया। वह मेरा रक्षाकवच था। मुझे शक्ति दे रहा था। वह चामत्कारिक था। दो-तीन बार मंत्र का जप नहीं हुआ तो मुझे बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ा।

प्रतिदिन गुरु सन्निधि प्रतिदिन मंगलपाठ

पूज्यप्रवर ने कुछ दिनों बाद जब सेवा करवाई तब फरमाया–इसको प्रतिदिन गुरु सन्निधि मिलनी चाहिए। चाहे वह आधा मिनट हो या आधा घंटा। ये स्वयं पैदल चलकर आती हैं। कठिनाई हो तो व्हील चेयर से भी आ सकती है और भी कभी दिक्कत हो तो साध्वीप्रमुखाश्रीजी के माध्यम से हमें जानकारी मिल जाए। हम स्वयं दर्शन देने वहाँ आ जाएँगे। परमपूज्य आचार्यप्रवर की कृपा से उन्हें प्रतिदिन गुरु सन्निधि प्राप्त हुई। पहले वे प्रातः लगभग ६:१५ के आसपास जातीं। वहाँ यथानुकूलता सेवा-उपासना करतीं। माला-जाप करती और पूज्यश्री से मंगलपाठ सुनकर आ जातीं। संवत्सरी के पारणे के कुछ दिनों बाद उनके स्वास्थ्य की स्थिति कुछ कमजोर बनी। चक्कर ज्यादा आने लगे। चक्कर की स्थिति में उनका पैदल जाना उचित नहीं था। पर उनका मनोबल मजबूत था। उनका मन पैदल जाने का ही कह रहा था। पर हमने उनको व्हीलचेयर से जाने के लिए राजी कर लिया। यह क्रम चल रहा था। कार्तिक कृष्णा द्वितीया को शारीरिक अस्वस्थता के कारण वे व्हील चेयर से भी नहीं जा पा रही थी। दिन मात्र २० मिनट रहा होगा। उन्होंने कहा–मुझे गुरुदेव के दर्शन करने हैं, मंगलपाठ सुनना है। हमने कहा–गुरुदेव को निवेदन करवा दें। उन्होंने कहा–नहीं। गुरुदेव तो बहुत श्रम करवाते हैं। गुरुदेव को मेहनत मत दो। मुझे ही ले चलो। हम उन्हें गुरुदेव के दर्शन कराने ले गए।

दूसरे दिन प्रातः भ्रमण के दौरान अचानक आचार्यप्रवर हमारे ठिकाणे के बाहर पधारे और फरमाया–चंद्रिकाश्रीजी को अभी दर्शन दे देते हैं। चंद्रिकाश्रीजी के दवाई आदि का आवश्यक कार्य चल रहा था। आचार्यप्रवर–'जल्दबाजी मत करो। आराम से काम कर लो। हम यहीं हॉल में खड़े हैं।'

आचार्यप्रवर हमारे कक्ष में पधारे, बिराजे। साध्वीप्रमुखाश्रीजी भी पधार गए। आचार्यप्रवर ने अनुकंपा करवाते हुए फरमाया–अब हम ही रोज दर्शन देने आ जाएँगे। भ्रमण के दौरान प्रथम पड़ाव यहीं का रहेगा। चंद्रिकाश्रीजी ने निवेदन किया–आपश्री ने बहुत कृपा कराई। गुरुदेव आप मेहनत नहीं करवाएँ। मेरे आने में कठिनाई नहीं है। जब कभी कठिनाई होगी तो मैं निवेदन करवा दूँगी। पर आचार्यप्रवर ने स्वयं का पधारना ही स्वीकार किया और यह क्रम प्रतिदिन बना रहा। गुरुदेव का पधारना, विराजना और उन्हें सेवा-उपासना करवाना उन पर असीम वात्सल्य का ही परिणाम था। **(क्रमशः)**

प्रभु पार्श्व प्रणति तपोयज्ञ के अंतर्गत देशभर में हुए हजारों उपवास एवं सैकड़ों पौषध

जयपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा तपोयज्ञ के अंतर्गत पौष बदी दशमी को जैन धर्म के २३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के जन्म कल्याणक दिवस के अवसर पर हजारों की संख्या में उपवास एवं सैकड़ों की संख्या में पौषध कर प्रभु पार्श्वनाथ के चरणों में युवाओं एवं किशोरों ने आध्यात्मिक भेंट चढ़ाई।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित विशेष आराधना एवं उपसर्गहर स्रोत की आराधना भी की गई।

२०० से अधिक परिषदों ने तपोयज्ञ में अपनी सहभागिता युवकों एवं किशोरों के माध्यम से दर्ज करवाई।

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा, कोषाध्यक्ष भरत मरलेचा, अभातेयुप साथी अभिनंदन नाहटा, तेयुप जयपुर अध्यक्ष राजेश छाजेड़ एवं जयपुर युवाशक्ति की उपस्थिति में प्रभु पार्श्व प्रणति तपोयज्ञ के बैनर का अनावरण किया गया।

इसके अतिरिक्त अनेकों स्थानीय परिषदों द्वारा क्षेत्र में विराजित चारित्रात्माओं के सान्निध्य में बैनर अनावरण एवं पार्श्व जन्म कल्याणक दिवस पर उपवास एवं पौषध की प्रेरणा से संबंधित कार्यक्रम आयोजित हुए।

इस कार्यक्रम में कई परिषदों ने विशिष्ट कार्य करते हुए सैकड़ों की संख्या में उपवास की आराधना की जिसमें सूरत, नई दिल्ली, उधना, चेन्नई, अहमदाबाद तथा पर्वत पाटिया, बडोदरा, बारडोली, डोंबिवली, मानसा मुख्य रूप से शामिल रहे। कई परिषदों के सभी पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्यों ने भी उपवास किए। उपवास करने का आलम यह रहा कि कुछ स्थानों पर परिषद नहीं होने के बावजूद भी अच्छी संख्या में उपवास/पौषध का क्रम चला। जिनकी सूचना लिंक के माध्यम से प्राप्त हुई। उपवास का यह क्रम भारत के अलावा नेपाल में भी चला और प्राप्त सूचनाओं के अनुसार वहाँ से भी अच्छी संख्या में उपवास के रूप में अपनी आहुति प्रदान की।

तपोयज्ञ के राष्ट्रीय प्रभारी दीपक रांका एवं सहप्रभारी सूर्य प्रकाश डागा के साथ आयाम सहयोगी राज्य-वार के रूप में अरुण चंडालिया, अनुज जैन, विकास कोठारी, मनोज ओस्तवाल, सोनू डागा, दीपक बोथरा, प्रकाश बैद, महावीर टेबा, महेंद्र आंचलिया, पंकज डांगी, पीयूष लूणिया, आदित्य बरड़िया, प्रवीण नोलखा, गौतम जैन आदि का विशेष परिश्रम लगा। तपोयज्ञ टीम ने परम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमण जी एवं समस्त चारित्रात्माओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि पूज्यप्रवरों की प्रेरणा का ही परिणाम है कि बिना मौसम में भी तपस्या की झड़ी लग गई।

अभातेयुप के पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमार जी द्वारा प्रदत्त मार्गदर्शन के लिए कृतज्ञता ज्ञापित की। तपोयज्ञ की सफलता में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा के आह्वान से परिषदों में सार-संभाल संगठन यात्रा का भी विशेष योगदान रहा। जिसमें सभी परिषदों ने सार-संभाल यात्रा के दौरान अपने साथियों को उपवास के लिए निरंतर जागरूक किया। प्रभारी दीपक रांका ने बताया कि देश भर की संपूर्ण परिषदें केंद्र द्वारा प्रदत्त एक निर्देश को शिरोधार्य कर जिस प्रकार से कार्य करती हैं यह केंद्रीय नेतृत्व का हर कार्य आसान कर देती है।

सीपीएस दीक्षांत समारोह का आयोजन

सरदारपुरा।

अभातेयुप के तत्त्वावधान मे तेयुप द्वारा कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला की ग्रेजुएशन सेरेमनी का आयोजन किया गया। अभातेयुप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्रेयांस कोठारी की उद्घोषणा से प्रारंभ हुए इस समारोह में तेयुप, सरदारपुरा के सदस्य निर्मल छल्लाणी व राहुल छाजेड़ के मंगलाचरण से हुआ। तेयुप के अध्यक्ष महावीर चौधरी ने स्वागत उद्बोधन दिया।

अभातेयुप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्रेयांस कोठारी ने सभी सीपीएस प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कार्यक्रम की महत्ता से सभी को अवगत कराया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि निलेश संचेती ने बताया कि एक वक्ता बनने के लिए आपको आत्मविश्वास को जगाना होगा। सफल वक्ता वही हो सकता है जो सफल श्रोता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अभातेयुप के राष्ट्रीय सहमंत्री-द्वितीय भूपेश कोठारी ने बताया कि सीपीएस कैसे अपनी बोलने की शैली में निखार लाकर हमें एक अच्छा वक्ता बनाती है। हमें कभी डरकर हार नहीं माननी चाहिए, प्रयास करते रहना चाहिए। हम सभी में कुछ न कुछ कमियाँ हैं पर हम उन कमियों को भी दूर कर सकते हैं, जब मन में यह भरोसा हो कि हम यह कर सकते हैं।

प्रतिभागियों ने सामाजिक महत्त्व के विभिन्न विषयों पर दी अपनी प्रस्तुति

कार्यक्रम संयोजक विकास चोपड़ा ने बताया कि इस समारोह में सीपीएस प्रतिभागियों ने ६ दिवस की कार्यशाला की ट्रेनिंग के आधार पर विभिन्न विषयों पर वक्तव्य दिए। सामाजिक महत्त्व के विभिन्न विषयों पर प्रतिभागियों ने अपनी प्रस्तुति दी।

प्रशस्ति-पत्र प्रदान

सह-संयोजक निर्मल छल्लाणी व ऋषभ श्यामसुखा ने बताया कि सभी प्रतिभागियों को सीपीएस ग्रेजुएट का प्रमाण पत्र दिया गया। कार्यक्रम प्रायोजक उम्मेदमल सिंघवी, अभातेयुप के समिति सदस्य कैलाश जैन, तेरापंथ सरदारपुरा सभा के अध्यक्ष माणक तातेड़, अणुव्रत समिति, जोधपुर की अध्यक्षा डॉ० सुधा भंसाली, टीपीएफ, जोधपुर के अध्यक्ष पवन बोथरा, तेयुप, सरदारपुरा के पूर्व अध्यक्ष रतन चोपड़ा, सतीश बाफना, तेरापंथ महिला मंडल की उपाध्यक्ष मोनिका चोरड़िया की उपस्थिति में सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

लोकतंत्र में अनुशासन का आलोक...

(पृष्ठ १२ का शेष)

पूरी दुनिया में विनयशीलता का महत्त्व है। जिस संगठन, परिवार, समाज, राष्ट्र में रहे, अनुशासन में रहे। मर्यादा में हैं। तब तक ठीक है। सूर्य मर्यादा में चलता है। समयबद्धता, नियमितता सीखनी हो तो सूर्य से सीखी जा सकती है। अनुशासन का एक पाठ सूर्य से सीखा जा सकता है। वर्ष के महीनों में नियमितता है। दिनों की भी अपनी व्यवस्था है।

हम प्रकृति से अनुशासन का पाठ सीख सकते हैं। हमारे जीवन में भी अनुशासन, निरहंकारता के तत्त्व रहें तो जीवन और आत्मा अच्छे रह सकते हैं। जयपुर का पार्श्ववर्ती क्षेत्र जोबनेर में भी धार्मिकता के संस्कार रहें। अहिंसा का पालन करते रहें। पूज्यप्रवर ने त्याग स्वीकार करवाए।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में राजेंद्र बरड़िया, जोबनेर महिला मंडल, नगर पालिकाध्यक्ष मंजु देवी सिंह, दिगंबर समाज से सोनाक्षी जैन, नोरतनमल ओसवाल, नमिष्का ओसवाल, प्रवीण पोकरणा, दिव्या बरड़िया, सुशीला कोठारी, राजकुमारी बरड़िया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अध्यात्म की साधना में आत्मानुशासन...

(पृष्ठ १२ का शेष)

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मंगल प्रवचन व कुछ घंटों के विश्राम के उपरांत सायं करीब तीन बजे आचार्यश्री अपनी अहिंसा यात्रा के साथ पुनः सांध्यकालीन विहार को गतिमान हुए। लगभग पाँच किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री खतवाड़ी कलां गाँव स्थित राजकीय उत्कृष्ट उच्च प्राथमिक विद्यालय के प्रांगण में पधारे। ग्रामीणों को आचार्यश्री के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। आचार्यश्री का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

भिक्षु भक्ति संध्या का आयोजन

चलथान।

तेयुप द्वारा तेरस निमित्त भिक्षु भक्ति संध्या के कार्यक्रम का आयोजन कैलाशचंद्र, हिरल कुमार, प्रिंसकुमार डांगी के निवास स्थल पर किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत भक्तों ने सामुहिक जाप से की। सभा मंत्री सुरेशचंद्र पितलिया ने भिक्षु भक्ति संध्या में पधारे सभी श्रावक-श्राविकाओं को नववर्ष में मंगल प्रवेश निमित्त शाब्दिक स्वागत किया। तेयुप अध्यक्ष ज्ञान दुगड़ ने सभी भिक्षु भक्तों की सराहना करते हुए उन्हें नव वर्ष के प्रति शुभकामनाएँ प्रेषित की। भक्ति संध्या के कार्यक्रम को तेयुप, चलथान के फेसबुक पेज पर भी लाइव किया गया।

भक्ति संध्या कार्यक्रम के संयोजक संस्कार प्रभारी भावित बाबेल, संस्कार सहप्रभारी निर्मल दक द्वारा भक्ति संध्या की रूपरेखा पहले से तैयार कर दी जाती है। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा अध्यक्ष सोहनलाल बाबेल, सभा मंत्री सुरेशचंद्र पितलिया, जयंतीलाल नौलखा, अशोक नौलखा, विनोद कोठारी सहित तेयुप, चलथान के अनेक सदस्य एवं महिला मंडल की बहनों के साथ लगभग ४५ भिक्षु भक्तों की उपस्थिति रही।

भक्ति संध्या में बाली खाब्या, सुरेशचंद्र पितलिया, मीना नौलखा, रंजूला सिंघवी, दीपक खाब्या, बिपिन पितलिया, कन्या मंडल ने भी प्रस्तुति दी। तेयुप मंत्री दीपक खाब्या ने तेयुप, चलथान की ओर से आभार ज्ञापन किया। परिवार की ओर से आभार ज्ञापन कैलाश डांगी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
17 - 23 जनवरी, 2022

✦ *तात्त्विक ज्ञान देना, किसी को चित्तसमाधि पहुँचाना, यह भी सेवा का ही कार्य है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

अध्यात्म की साधना में आत्मानुशासन जरूरी है : आचार्यश्री महाश्रमण

सिनोदिया, ६ जनवरी, २०२२

अध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी जन-जन को आशीर्वाद प्रदान करते हुए १४ किमी विहार कर बी०एल० भारती विद्या मंदिर पधारे। विद्यालय में अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि एक शब्द है—आत्मानुशासन। अपने पर अनुशासन। दूसरों पर अनुशासन किया जाता है, उसमें भी संभवतः ज्यादा कठिन हो सकता है, स्वयं पर अनुशासन करना।

शास्त्रकार ने कहा है कि अच्छा यही है कि स्वयं अपने आप पर अनुशासन कर लिया। संयम, तप के द्वारा स्वयं स्वयं का दमन करे, यह अच्छा है। यदि स्वयं का स्वयं पर अनुशासन नहीं होता है, तो फिर दूसरे अनुशासन करते हैं।

अनुशासन करने वाली तो हमारी आत्मा है। चेतना, सम्यक् विचारधारा यह अनुशास्ता है। अनुशासन अपने शरीर, वाणी, मन और अपनी इंद्रियों पर करें। इन चारों पर अनुशासन हमारे द्वारा हो जाता है, तो अपने पर अनुशासन हो गया।

शरीर पर हमारा अनुशासन हो, शरीर गलत काम न कर ले। शरीर से किसी को पीड़ा न पहुँचाएँ। शरीर की स्थिरता रखने का प्रयास करें। हाथों, पैरों का संयम रखो। वाणी पर कंट्रोल रखें। अनुपयोगी न बोलें। मौन का अभ्यास भी अच्छा है। अनावश्यक-अनपेक्षित न बोलें। प्रमाद में कटु-कर्कश व असत्य बोलने से बचें। मृषा-भाषण व मिथ्या लेखन न हो।

मन पर अनुशासन हो। मन में खराब विचार न करें। बुरी कामना किसी के प्रति न करें। अशुभ चिंतन, अशुभ कल्पना से मन को बचाना चाहिए। कभी विचार मन में गलत आ जाए तो मन में ही बोल दें इस विचार को मेरा समर्थन नहीं है। पवित्र मंत्र का उस समय जाप कर लें। उसकी निंदा-गृहा कर लें। मन की चंचलता को कम करने का प्रयास करें। निर्विचारता का अभ्यास हो। प्रेक्षाध्यान में यह प्रयोग किया जा सकता है। साथ में तन की चंचलता भी कम करें।

अपनी पाँचों इंद्रियों पर अनुशासन करना। बुरा मत सुनो, बुरा मत देखो, बुरा मत बोलो, बुरा मत खाओ, राग-द्वेष से मुक्त रहो। इंद्रियों का अनावश्यक प्रयोग न हो। शरीरानुशासन, वचनोनुशासन, मनोनुशासन और इंद्रियानुशासन—ये चार आ गए तो आत्मानुशासन अपने आप हो गया। अध्यात्म की साधना में आत्मानुशासन जरूरी है। निज पर शासन, फिर अनुशासन।

पहले स्वयं पर अनुशासन करें तो फिर दूसरों पर अनुशासन करने की योग्यता आ सकेगी। यह एक प्रसंग से समझाया। गुरु बनने के लिए साधना करनी होती है। तुम दूसरों के अनुशासन में रहने से कतराते हो तो दूसरे क्यों तुम्हारे अनुशासन में रहेंगे। आत्मानुशासन बन हम शरीर, वाणी, मन और इंद्रिय पर अनुशासन करने वाला बन सकते हैं।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

लोकतंत्र में अनुशासन का आलोक रहना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

जोबनेर, ५ जनवरी, २०२२

समता के साधक, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी १५ किलोमीटर विहार कर जोबनेर स्थित श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय पधारे। स्थानीय श्रावकों ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए महाश्रमणजी ने फरमाया कि शास्त्रकार ने मानो एक सुंदर सूक्त बनाया है कि जो अभिजीत हो तो उसके ------ मानो फुफकारने लगता है।

आदमी को ज्ञान, जाति, बल, रूप आदि अनेक बातों का घमंड या अहंकार हो सकता है। अनुशासन-विनय ये ऐसे तत्त्व हैं, जिनसे परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व अच्छा रह सकता है। यह एक प्रसंग से समझाया कि जो अनुशासन में रहता है, वह कुछ प्राप्त कर सकता है। हमारे जीवन में अनुशासन विनय का गुण होता है, तो व्यक्ति का पारिवारिक, सामाजिक जीवन अच्छा हो सकता है।

भारत देश में लोकतंत्र प्रणाली है। राजतंत्र से लोकतंत्र अच्छा रहता है। जनता द्वारा जनता का काम चलता है। जहाँ लोकतंत्र है, वहाँ अहिंसा, सहअस्तित्व, समानता—ये तत्त्व विद्यमान रह सकते हैं। लोकतंत्र में आलोक रहना चाहिए। अंधेरा न हो। लोकतंत्र में भी अनुशासन चाहिए। आदमी निर्भीक रहे, पर व्यवस्था का ध्यान रखे।

लोकतंत्र में अनुशासन न हो तो देश गड़बड़ा सकता है। लोकतंत्र रूपी जो रथ है, उसके अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा पहिए हैं। सारथी रूप में लोकतांत्रिक प्रणाली है। घमंड, उद्दंडता, उच्छृंखलता जहाँ होती है, वहाँ दुःख हो सकता है। देवता, मनुष्य या पशु कोई हो जहाँ अविनीतता है, वहाँ दुःखी हो जाते हैं। सुविनीत हैं, तो वे सुखी रहते हैं।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

अहिंसा यात्रा : चित्रमय झलकियाँ

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **संदीप कोठारी** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**